अध्याय–१

विषय प्रवेश

१.१ प्रस्तावना

१.२ समस्या प्रतिपादन

१.३ पदो एवं संकल्पनाओं की परिभाषा

१.४ हेतु शोध अध्ययन के उद्देश्य

१.५ संशोधन

१.६ संशोधन समस्या का महत्व

१.७ संशोधन परिसीमन

१.८ आगामी अध्यायों का आयोजन

१.९ उपसंहार

प्रथम अध्याय

विषय प्रवेश : प्रस्तावना

प्रेमचंद का परिचय :

प्रेमचंद (३१ जुलाई, १८८०-८ अक्टूबर १९३६) हिन्दी और उर्दू के महानतम भारतीय लेखकों में से एक है । मूल नाम धनपत राय श्रीवास्तव वाले प्रेमचंद को नवाब राय और मुंशी प्रेमचंद के नाम से भी जाना जाता है । उपन्यास के क्षेत्र में उनके योगदान को देखकर बंगाल के विख्यात उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने उन्हें उपन्यास सम्राट कहकर संबोधित किया था । प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी और उपन्यास की एक ऐसी परंपरा का विकास किया जिसने पूरी शती के साहित्य का मार्गदर्शन किया । आगामी एक पूरी पीढी को गहराई तक प्रभावित कर प्रेमचंद ने साहित्य की यथार्थवादी परंपरा की नींव रखी । उनका लेखन हिन्दी साहित्य की एक ऐसी विरासत है जिसके बिना हिन्दी के विकास का अध्ययन अधूरा होगा । वे एक संवेदनशील लेखक, सचेत नागरिक, कुशल वक्ता तथा सुधी संपादक थे । बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में, जब हिन्दी में की तकनीकी सुविधाओं का अभाव था, उनका योगदान अतुलनीय है । प्रेमचंद के बाद जिन लोगों ने साहित्य को सामाजिक सरोकारों और प्रगतिशील मूल्यों के साथ आगे बढाने का काम किया, उनमें यशपाल से लेकर मुक्तिबोध तक शामिल हैं ।

जीवन परिचय :

प्रेमचंद का जन्म ३१ जुलाई १८८० को वाराणसी से निकट लमही गाँव में हुआ था। उनकी माता का नाम आनन्दी देवी था तथा पिता मुंशी अजायबराय लमही में डाकमुंशी थे । उनकी शिक्षा का आरंभ उर्दू, फारसी से हुआ और जीवनयापन का अध्यापन से । पढने का

शौक उन्हें बचपन से ही लग गया । १३ साल की उम्र में ही उन्होंने तिलिस्मे होशरूबा पढ लिया और उन्होंने उर्दू के मशहूर रचनाकार रतननाथ शरसार, मिरजा रूसबा और मौलाना शरर के उपन्यासों से परिचय प्राप्त कर लिया । १८९८ में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक स्थानीय विदूयालय में शिक्षक नियुक्त हो गए । नौकरी के साथ ही उन्होंने पढाई जारी रखी । १९१० में उन्होंने अंग्रेजी, दर्शन, फारसी और इतिहास लेकर इंटर पास किया और १९१९ में बी.ए. पास करने के बाद शिक्षा विभाग के इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए । सात वर्ष की अवस्था में उनकी माता तथा चौदह वर्ष की अवस्था में पिता का देहान्त हो जाने के कारण उनका प्रारंभिक जीवन संघर्षमय रहा । उनका पहला विवाह उन दिनों की परंपरा के अनुसार पंद्रह साल की उम्र मे हुआ जो सफल नहीं रहा । वे आर्यसमाज से प्रभावित रहे । जो उस समय का बहुत बडा धार्मिक और सामाजिक आंदोलन था । उन्होंने विधवा-विवाह का समर्थन किया । उनकी तीन संताने हुई । श्रीपत राय, अमृतराय और कमला देवी श्रीवास्तव । १९१० में उनकी रचना सोजे-वतन (राष्ट्र का विलाप) के लिए हमीरपुर के जिला कलेक्टर ने तलब किया और उन पर जनता को भड़काने का आरोप लगाया । सोजे-वतन की सभी प्रतियाँ जब्त कर नष्ट कर दी गई । कलेक्टर ने नवाबराय को हिदायत दी कि अब वे कुछ भी नहीं लिखेंगे, यदि लिखा तो जेल भेज दिया जाएगा । इस समय तक प्रेमचंद धनपत राय नाम से लिखते थे । उर्दू में प्रकाशित होने वाली जमाना पत्रिका के सम्पादक और उनके अजीज दोस्त मुंशी दयानारायण निगम ने उन्हें प्रेमचंद नाम से लिखने की सलाह दी । इसके बाद वे प्रेमचन्द के नाम से लिखने लगे । उन्होंने आरंभिक लेखन जमाना पत्रिका में ही किया । जीवन के अंतिम दिनों में वे गभीर रुप से बीमार पड़े । उनका उपन्यास मंगलसूत्र पूरा नही हो सका और लम्बी बीमारी के बाद ८ अक्टूबर १९३६ को उनका निधन हो गया । उनका अंतिम उपन्यास मंगल सूत्र उनके पुत्र अमृतने पूरा किया ।

कार्यक्षेत्र :

प्रेमचंद आधुनिक हिन्दी कहानी के पितामह माने जाते है । यों तो उनके साहित्यिक जीवन का आरंभ १९०१ से हो चुका था । पर उनकी हिन्दी कहानी सरस्वती पत्रिका के दिसम्बर अंक में १९१५ में सौत नाम से प्रकाशित हुई और १९३६ में अंतिम कहानी कफन नाम से । बीस वर्षो की इस अवधि में उनकी कहानियों के अनेक रंग देखने को मिलते है । उनसे पहले हिंदी में काल्पनिक, एय्यारी और पौराणिक धार्मिक रचनाएँ ही की जाती थी । प्रेमचंद ने हिंदी में यथार्थवाद की शुरुआत की । भारतीय साहित्य का बहुत सा विमर्श जो बाद में प्रमुखता से उभरा चाहे वह दलित साहित्य हो या नारी साहित्य उसकी जड़ें कहीं गहरे प्रेमचंद के साहित्य में दिखाई देती हैं । प्रेमचंद के लेख पहली रचना के अनुसार उनकी पहली रचना अपने मामा पर लिखा व्यंग्य थी, जो अब अनुपलब्ध है । उनका पहला उपलब्ध लेखन उनका उर्द् उपन्यास असरारे मआदि है । प्रेमचंद का दूसरा उपन्यास हमखुर्मा व हमसवाब जिसका हिंदी रूपांतरण प्रेमा नाम से १९०७ में प्रकाशित हुआ । इसके बाद प्रेमचंद का पहला कहानी संग्रह खोजे वतन नाम से आया जो १९०८ में प्रकाशित हुआ । सोजे-वतन यानी देश का दर्द । देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत होने के कारण इस पर अंग्रेजी सरकार ने रोक लगा दी और इसके लेखक को भविष्य में इस तरह का लेखन न करने की चेतावनी दी । इसके कारण उन्हें नाम बदलकर लिखना पडा । प्रेमचंद नाम से उनकी पहली कहानी बडे घर की बेटी जमाना पत्रिका के दिसम्बर १९१० के अंक में प्रकाशित हुई । मरणोपरांत उनकी कहानियाँ मानसरोवर नाम से ८ खंडो में प्रकाशित हुई । कथा सम्राट प्रेमचन्द का कहना था कि साहित्यकार देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है । यह बात उनके साहित्य में उजागर हुई है । १९२१ में उन्होंने महात्मा गांधी के आहवान पर अपनी नौकरी छोड़ दी । कुछ महीने मर्यादा पत्रिका का संपादन भार संभाला, छह साल तक

माधुरी नामक पत्रिका का संपादन किया, १९३० में बनारस से अपना मासिक पत्र हंस शुरू किया और १९३२ के आरंभ में जागरण नामक एक साप्ताहिक और निकाला । उन्होंने लखनऊ में १९३६ में अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के सम्मेलन की अध्यक्षता की । उन्होंने मोहन दयाराम भवनानी की अजंता सिनेटोन कंपनी में कहानी लेखक की नौकरी भी की । १९३४ में प्रदर्शित मजदूर नामक फिल्म की कथा लिखी और कंट्रेक्ट की साल भर की अवधि पूरी किये बिना ही दो महीने का वेतन छोड़कर बनारस भाग आये क्योंकि बंबई (आधुनिक मुंबई) का और उससे भी ज्यादा वहाँ की फिल्मी दुनिया का हवा-पानी उन्हें रास नहीं आया । उन्होंने मूल रूप से हिंदी में १९१५ से कहानियाँ लिखना और १९१८ से उपन्यास लिखना शुरू किया । प्रेमचंद ने कुल करीब तीन सौ कहानियाँ, लगभग एक दर्जन उपन्यास और कई लेख लिखे । उन्होंने कुछ नाटक भी लिखे और कुछ अनुवाद कार्य भी किया । प्रेमचंद के कई साहित्यिक कृतियों का अंग्रेजी, रूसी, जर्मन सहित अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ । गोदान उनकी कालजयी रचना है । कफन उनकी अंतिम कहानी मानी जाती है । उन्होंने हिंदी और उर्दू में पूरे अधिकार से लिखा । उनकी अधिकांश रचनाएँ मूल रूप से उर्दू में लिखी गई हैं लेकिन उनका प्रकाशन हिंदी में पहले हुआ । तैंतीस वर्षों के रचनात्मक जीवन में वे साहित्य की ऐसी विरासत सौप गए जो गुणों की दृष्टि से अमूल्य है और आकार की दृष्टि से असीमित ।

कृतियाँ :

प्रेमचन्द की रचना-दृष्टि विभिन्न साहित्य रूपों में प्रवृत्त हुई । बहुमुखी प्रतिमा संपन्न प्रेमचंद ने उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, लेख, सम्पादकीय, संस्मरण आदि अनेक विधाओं में साहित्य की सृष्टि की । प्रमुखतया उनकी ख्याति कथाकार के तौर पर हुई और अपने जीवन काल में ही वे उपन्यास सम्राट की उपाधि से सम्मानित हुए । उन्होंने कुल १५ उपन्यास, ३०० से कुछ अधिक कहानियाँ, ३ नाटक, १० अनुवाद, ७ बाल-पुस्तकें तथा

हजारों पृष्ठों के लेख, सम्पादकीय, भाषण, भूमिका, पत्र आदि की रचना की लेकिन जो यश और प्रतिष्ठा उन्हें उपन्यास और कहानियों से प्राप्त हुई वह अन्य विधाओं से प्राप्त न हो सकी । यह स्थिति हिन्दी और उर्दू भाषा दोनों में समान रूप से दिखायी देती है ।

उपन्यास :

प्रेमचंद के उपन्यास न केवल हिन्दी उपन्यास साहित्य में बल्कि संपूर्ण भारतीय साहित्य में मील के पत्थर है । प्रेमचंद कथा-साहित्य में उनके उपन्यासकार का आरम्भ पहले होता है । उनका पहला उर्दू उपन्यास असरारे मआबिद उर्फ देवस्थान रहस्य उर्दू साप्ताहिक आवाज-ए-खल्क में ८ अकटूबर, १९०३ से १ फरवरी, १९०५ तक धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ । उनका दूसरा उपन्यास हमखुर्मा व हमसवाब जिसका हिंदी रूपांतरण प्रेमा नाम से १९०७ में प्रकाशित हुआ । क्यूंकि प्रेमचंद मूल रूप से उर्दु के लेखक थे और उर्दू से हिंदी में आए थे । इसलिए उनके सभी आरंभिक उपन्यास मूल रूप से उर्दू में लिखे गए और बाद में उनका हिन्दी तर्जुमा किया गया । उन्होंने सेवासदन उपन्यास से हिंदी उपन्यास की दुनिया में प्रवेश किया । यह मूल रूप से उन्होंने बाजारे-हुसन नाम से पहले उर्दू में लिखा लेकिन इसका हिंदी रूप सेवासदन पहले प्रकाशित कराया । सेवासदन एक नारी के वेश्या बनने की कहानी है । डॉ. रामविलाश शर्मा के अनुसार सेवासदन में व्यक्त मुख्य समस्या भारतीय नारी की पराधीनता है । इसके बाद किसान जीवन पर उनका पहला उपन्यास प्रेमाश्रम (१९२१) आया । इसका मसौदा भी पहले उर्दूं में गोशाए-आकियत नाम से तैयार हुआ था लेकिन सेवासदन की भांति इसे पहले हिंदी में प्रकाशित कराया । प्रेमाश्रम किसान जीवन पर लिखा हिंदी का संभवत: पहला उपन्यास है । यह अवध के किसान आंदोलनों के दौर में लिखा गया । इसके बाद रंगभूमि (१९२५)ए कायाकल्प (१९२६), निर्मला (१९२७), गबन (१९३१), कर्मभूमि (१९३२) से होता हुआ यह सफर गोदान (१९३६) तक पूर्णता को प्राप्त हुआ । रंगभूमि के प्रेमचंद एक अंधे भिखारी सूरदास को कथा का

नायक बनाकर हिंदी कथा साहित्य में क्रांतिकारी बदलाव का सूत्रपात कर चूके थे । गोदान का हिंदी साहित्य संबंधी विचारधारा आदर्शोनमुख यथार्थवाद से आलोचनात्मक यथार्थवाद तक की पूर्णता प्राप्त करती है । एक सामान्य किसान को पूरे उपन्यास का नायक बनाना भारतीय उपन्यास परंपरा की दिशा बदल देने जैसा था । सामंतवाद और पूंजीवाद के चक्र में फंसकर हुई कथानायक होरी की मृत्यु पाठकों के जहन को झकझोर कर रख जाती है । किसान जीवन पर अपने पिछले उपन्यासों प्रेमाश्रम और कर्मभूमि में प्रेमचंद यथार्थ की प्रस्तुति करते-करते उपन्यास के अंत तक आदर्श का दामन थाम लेते हैं । लेकिन गोदान का कारूणिक अंत इस बात का गवाह है कि तब तक प्रेमचंद का आदर्शवाद से मोहभंग हो चुका था । यह उनकी आखिरी दौर की कहानियों में भी देखा जा सकता है । मंगलसूत्र प्रेमचंद का अधूरा उपन्यास है । प्रेमचंद के उपन्यासों का मूल कथ्य भारतीय ग्रामीण जीवन था । प्रेमचंद ने हिंदी उपन्यास को जो ऊँचाइ प्रदान की, वह परवर्ती उपन्यासकारों के लिए एक चुनौती बनी रही । प्रेमचंद के उपन्यास भारत और दुनिया की कई भाषाओं में अनुदित हुए खासकर उनका सर्वाधिक चर्चित उपन्यास गोदान इनके अन्य प्रमुख उपन्यास हैं ।

- असरारे मआबिद उर्फ देवस्थान रहस्य उर्दू साप्ताहिक आवाज-ए-खल्क में ८ अक्टूबर, १९०३ से १ फरवरी, (१९०५ तक प्रकाशित) ।
- सेवासदन १९१८
- प्रेमाश्रम १९२२
- रंगभूमि १९२५
- निर्मला १९२५
- कायाकल्प १९२७
- गबन १९२८
- कर्मभूमि १९३२

- गोदान १९३६
- मंगलसूत्र (अपूर्ण)

कहानी :

इनकी अधिकतर कहानियों में निम्न व मध्यम वर्ग का चित्रण है । डॉ. कमलकिशोर गोयनका ने प्रेमचंद की संपूर्ण हिंदी-उर्दू कहानी को प्रेमचंद कहानी रचनावली नाम से प्रकाशित करता है । उनके अनुसार प्रेमचंद ने कुल ३०१ कहानियाँ लिखी है जिनमें ३ अभी अप्राप्य है । प्रेमचंद का पहला कहानी संग्रह सोजे वतन नाम से जून १९०८ में प्रकाशित हुआ । इसी संग्रह की पहली कहानी दुनिया का सबसे अनमोल रतन को आम तौर पर उनकी पहली प्रकाशित कहानी माना जाता है । डॉ. गोयनका के अनुसार कानूपर से निकलने वाली उर्दू मासिक पत्रिका जमाना के अप्रैल अंक में प्रकाशित सांसारिक प्रेम और देश-प्रेम वास्तव में उनकी पहली प्रकाशित कहानी है । उनके जीवन काल में कुल नौ कहानी संग्रह प्रकाशित हुए सप्रत सरोज, नवनिधि, प्रेमपूर्णिमा, प्रेम-पचीसी, प्रेम-प्रतिमा, प्रेम-दवादशी, समरयात्रा, मानसरोवर : भाग एक व दो और कफन । उनकी मृत्यु के बाद उनकी कहानियाँ मानसरोवर शीषाक से ८ भागों में प्रकाशित हुई । प्रेमचंद साहित्य के मुदराधिकार से मुक्त होते ही विभिन्न संपादकों और प्रकाशकों ने प्रेमचंद की कहानियों के संकलन तैयार कर प्रकाशित कराए । उनकी कहानियों में विषय और शिल्प की विविधिता है । उन्होंने मनुषऊय के सभी वर्गो से लेकर पशु-पक्षियों तक को अपनी कहानियों में मुख्य पात्र बनाया है । उनकी कहानियों में किसानों, मजदूरों, स्त्रियों, दलितो आदि की समस्याएँ गंभीरता से चित्रित हुई हैं। उन्होंने समाजसुधार, देशप्रेम, स्वाधीनता संग्राम आदि से संबंधित कहानियाँ लिखी हैं । उनकी ऐतिहासिक कहानियाँ तथा प्रेमसंबंधी कहानियाँ काफी लोकप्रिय साबित हुई । प्रेमचंद की प्रमुख कहानियों में ये नाम लिये जा सकते है - पंच परमेश्वर, गुल्ली डंडा, दो बैलों की

कथा, ईदगाह, बड़े भाई साहब, पूस की रात, कफन, ठाकुर का कुआँ, सद्गति, बूढी काकी, तावान, विध्वंस, दूध का दाम, मंत्र आदि ।

नाटक :

प्रेमचंदने संग्राम (१९२३), कर्बला (१९२४), और प्रेम की वेदी (१९३३), नाटकों की रचना की । ये नाटक शिल्प और संवेदना के स्तर पर अच्छे है लेकिन उनकी कहानियों और उपन्यासों ने इतनी ऊँचाई प्राप्त कर ली थी कि नाटक के क्षेत्र में प्रेमचंद को कोई खास सफलता नहीं मिली । ये नाटक वस्तुत: संवादात्मक उपन्यास ही बन गए हैं ।

लेख/निबंध :

प्रेमचंद एक संवेदनशील कथाकार ही नहीं, सजग नागरिक व संपादक भी थे । उन्होंने हंस, माधुरी, जागरण आदि पत्र-पत्रिकाओं का संपादन करते हुए तत्कालीन अनय सहगामी साहित्यिक पत्रिकाओं चांद, मर्यादा, सवदेश आदि में अपनी साहित्यिक व सामाजिक चिंताओं को लेखों या निबंधो के माध्यम से अभिव्यकत किया । अमृतराव द्वारा संपादित प्रेमचंद विविध प्रसंग (तीन भाग) वास्तव में प्रेमचंद के लेखों का ही संकलन है । प्रेमचंद के लेख प्रकाशन संस्थान से कुछ विचार शीर्षक से भी छपे हैं । प्रेमचंद के मशहूर लेखों में निम्न लेख शुमार होते हैं - साहित्य का उद्‌देश्य, पुराना जमाना नया जमाना, स्वराज के फायदे, कहानी कला, कौमी भाषा के विषय में कुछ विचार, हिंदी-उर्दू की एकता, महाजनी सभ्यता, उपन्यास, जीवन के साहित्य का स्थान आदि ।

अनुवाद :

प्रेमचंद एक सफल अनुवादक भी थे । उन्होंने दूसरी भाषाओं के जिन लेखकों को पढा और जिनसे प्रभावित हुए उनकी कृतियों का अनुवाद भी किया । टॉलस्टॉय की कहानियां (१९२३), गाल्सवर्दी के तीन नाटकों का हडताल (१९३०), चांदी की डिबिया

(१९३१), और न्याय (१९३१) नाम से अनुवाद किया । उनके द्वारा रतननाथ सरशार के उर्दू उपन्यास फसान-ए-आजाद का हिंदी अनुवाद आजाद कथा बहुत मशहुर रहा है ।

समालोचना :

प्रेमचन्द उर्दू का संस्कार लेकर हिन्दी में आए थे और हिन्दी के महान लेखक बने । हिन्दी को अपना खास मुहावरा और खुलापन दिया । कहानी और उपन्यास दोनों में युगान्तरकारी परिवर्तन किए । उन्होंने साहित्य में सामयिकता प्रबल आग्रह प्रस्थापित किया । आम आदमी को उन्होंने अपनी रचनाओं का विषय बनाया और उसकी समस्याओं पर खुलकर कलम चलाते हुए उन्हें साहित्य के नायकों के पद पर आसीन किया । प्रेमचंद से पहले हिंदी साहित्य राजा-रानी के किस्सों, रहस्य-रोमांच में उलझा हुआ था । प्रेमचंद ने साहित्य को सच्चाई के धरातल पर उतारा । उन्होंने जीवन और कालखंड की सच्चाई को पन्ने पर उतारा । वे सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार, जमींदारी, कर्जखोरी, गरीबी, उपनिवेशवाद पर आजीवन लिखते रहे । प्रेमचन्द की ज्यादात्तर रचनाएँ उनकी ही गरीबी और दैन्यता की कहानी कहती है । ये भी गलत नहीं है कि वे आम भारतीय के रचनाकार थे । उनकी रचनाओं में वे नायक हुए जिसे भारतीय समाज अछूत और घणित समझा था । उन्होंने सरल, सहज और आम बोल-चाल की भाषा का उपयोग किया और अपने प्रगतिशील विचारों को दृढता से तर्क देते हुए समाज के सामने प्रस्तुत किया । १९३६ में प्रगतिशील लेखक संघ के पहले सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने कहा कि लेखक स्वभाव से प्रगतिशील होता है और जो ऐसा नहीं है वह लेखक नहीं है । प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के युग प्रवर्तक हैं । उन्होंने हिन्दी कहानी में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की एक नई परंपरा शुरु की ।

प्रेमचंद के जीवन संबंधी विवाद :

इतने महान रचनाकार होने के बावजूद प्रेमचंद का जीवन आरोपों से मुक्त नहीं है । प्रेमचंद के अध्येता कमलकिशोर गोयनका ने अपनी पुस्तक प्रेमचंद अध्ययन की नई दिशाएँ में प्रेमचंद के जीवन पर कुछ आरोप लगाकर उनके साहित्य का महत्व कम करने की कोशिश की । प्रेमचंद पर लगे मुख्य आरोप हैं – प्रेमचंद ने अपनी पहली पत्नी को बिना वजह छोडा और दूसरे विवाह के बाद भी उनके अन्य किसी महिला से संबंध रहे । प्रेमचंद ने जागरण विवाद में विनोदशंकर व्यास के साथ धोखा किया, प्रेमचंद ने अपनी प्रेस के वरिष्ठ कर्मचारी प्रवासीलाल वर्मा के साथ धोखाधडी की, प्रेमचंद की प्रेस में मजदूरों ने हडताल की, प्रेमचंद ने अपनी बेटी के बीमार होने पर झाड–फूंक का सहारा लिया, आदि कमलकिशोर गोयनका द्वारा लगाए गए ये आरोप प्रेमचंद के जीवन का एक पक्ष जरूर हमारे सामने लाते हैं जिसमें उनकी इंसानी कमजोरियाँ जाहिर होती हैं लेकिन उनके व्यापक साहित्य के मूल्यांकन पर इन आरोपों का कोई असर नहीं पड पाया है ।

मुंशी के विषय में विवाद

प्रेमचंद को प्राय: मुंशी प्रेमचंद के नाम से जाना जाता है । प्रेमचंद के नाम के साथ मुंशी कब और केसे जुड़ गया ? इस विषय में अधिकांश लोग यही मान लेते है कि प्रारंम्भ में प्रेमचंद अध्यापक रहे । अध्यापकों को प्राय: उस समय मुंशी जी कहा जाता था । इसके अतिरिक्त कायस्थों के नाम के पहले सम्मान स्वरूप मुंशी शब्द लगाने की परम्परा रही है । संभवत: प्रेमचंद जी के नाम के साथ मुंशी शब्द जुड़कर रूढ हो गया । प्रोफेसर शुकदेव सिंह के अनुसार प्रेमचंद जी ने अपने नाम के आगे मुंशी शब्द का प्रयोग स्वयं कभी नहीं किया । उनका यह भी मानना है कि मुंशी शब्द सम्मान सूचक है, जिसे प्रेमचंद के प्रशंसको ने कभी लगा दिया होगा । यह तथ्य अनुमान पर आधारित है । लेकिन प्रेमचंद के नाम के साथ मंशी विशेषण जुड़ने का प्रामाणिक कारण यह है कि हंस नामक पत्र प्रेमचंद एवं कन्हैयालाल मुंशी

के सह संपादन में निकलता था । जिसकी कुछ प्रतियों पर कन्हैंयालाल मुंशी का पूरा नाम न छपकर मात्र मुंशी छपा रहता था साथ ही प्रेमचंद का नाम इस प्रकार छपा होता था संपादक मुंशी प्रेमचंद हंस के संपादक प्रेमचंद तथा कन्हैयालाल मुंशी थे । परंतु कालांतर में पाठकों ने मुंशी तथा प्रेमचंद को एक समझ लिया और प्रेमचंद मुंशी प्रेमचंद बन गए । यह स्वाभाविक भी है । सामान्य पाठक प्राय: लेखक की कृतियों को पढता है, नाम की सूक्ष्मता को नहीं देखा करता । आज प्रेमचंद का मुंशी अलंकरण इतना रूढ हो गया है कि मात्र मुंशी से ही प्रेमचंद का बोध हो जाता है तथा मुंशी न कहने से प्रेमचंद का नाम अधूरा-अधूरा सा लगता है ।

विरासत :

प्रेमचंद ने अपनी कला के शिखर पर पहुँचने के लिए अनेक प्रयोग किए । जिस युग में प्रेमचंद ने कलम उठाई थी, उस समय उनके पीछे ऐसी कोई ठोस विरासत नहीं थी और न ही विचार और प्रगतिशीलता का कोई मॉडल ही उनके सामने था सिवाय बांग्ला साहित्य के। उस समय बंकित बाबू थे, शरतचंद्र थे और इसके अलावा टॉलस्टॉय जैसे रुसी साहित्यकार थे । लेकिन होते-होते उन्होंने गोदान जैसे कालजयी उपन्यास की रचना की जो कि एक आधुनिक क्लासिक माना जाता है । उन्होंने कथा सात्यि द्वारा हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं को जो अभिव्यक्ति दी उसने सियासी सरगर्मी को, जोश को और आंदोलन को सभी को उभारा और उसे ताकतवर बनाया और इससे उनका लेखन भी ताकतवर होता गया । प्रेमचंद इस अर्थ में निश्चित रूप से हिंदी के पहले प्रगतिशील लेखक कहे जा सकते हैं । १९३६ में उन्होंने प्रगतिशील लेखक संघ के पहले सम्मलेन को सभापति के रूप में संबोधन किया था । उनका यही भाषण प्रगतिशील आंदोलन के घोषणा पत्र का आधार बना । प्रेमचंद ने हिन्दी में कहानी की एक परंपरा को जन्म दिया और एक पूरी पीढी उनके कदमों पर आगे बढी । ५०-६० के दशक में रेणु, नागार्जुन और इनके बाद श्रीनाथ सिंहने ग्रामीण परिवेश की

कहानियाँ लिखी है, वो एक तरह से प्रेमचंद की परंपरा के तारतम्य में आती हैं । प्रेमचंद एक क्रांतिकारी रचनाकार थे, उन्होंने न केवल देशभक्ति बल्कि समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों को देखा और उनको कहानी के माध्यम से पहली बार लोगों के समक्ष रखा । उन्होंने उस समय के समाज की जो भी समस्याएँ थी उन सभी को चित्रित करने की शुरुआत कर दी थी। उसमें दलित भी आते है, नारी भी आती है । ये सभी विषय आगे चलकर हिन्दी साहित्य के बडे विमर्श बने । प्रेमचंद हिन्दी सिनेमा के सबसे अधिक लोकप्रिय साहित्यकारों में से हैं । सत्यजित राय ने उनकी दो कहानियों पर यादगार फिल्मे बनाई । १९७७ में शतरंज के खिलाडी और १९८१ में सद्‌गति । उनके देहांत को दो वर्षो बाद के सुब्रमण्यम ने १९३८ में सेवासदन उपन्यास पर फिल्म बनाई जिस में सुब्बालक्ष्मीने मुख्य भूमिका निभाई थी । १९७७ में मृणाल सेन ने प्रेमचंद की कहानी कफन पर आधारित ओका ऊरी कथा नाम से एक तेलुगु फिल्म बनाई जिसको सर्वश्रेष्ठ तेलुगू फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला । १९६३ में गोदान और १९६६ में गबन उपन्यास पर लोकप्रिय फिल्में बनीं । १९८० में उनके उपन्यास पर बना टीवी धारावाहिक निर्मला भी बहुत लोकप्रिय हुआ था ।

प्रेमचंद संबंधी नए अध्ययन :

हिंदी साहित्य व आलोचना में प्रेमचंद को प्रतिष्ठित करने का श्रेय डॉ. रामविलास शर्मा को दिया जाता है । उन्होंने प्रेमचंद पर दो प्रमुख किताबें लिखीं – प्रेमचंद, प्रेमचंद और उनका युग । प्रेमचंद के पत्रों को सहेजने का काम अमृतराय और मदनगोपाल ने किया । प्रेमचंद पर हुए नए अध्ययनों में कमलकिशोर गोयनका और डॉ. धर्मवीर का नाम उल्लेखनीय है । कमलकिशोर गोयनका ने प्रेमचंद के जीवन के कमजोर पक्षों को उजागर करने के साथ साथ प्रेमचंद का अप्राप्य साहित्य व प्रेमचंद विश्वकोश (दो भाग) का संपादन भी किया है । डॉ. धर्मवीर ने दलित दृष्टि से प्रेमचंद साहित्य का मूल्यांकन करते हुए प्रेमचंद : सामंत का मुंशी व प्रेमचंद की नीली आंखे नाम से पुस्तके लिखी है ।

पुरस्कार व सम्मान :

प्रेमचंद की स्मृति में भारतीय डाकतार विभाग की और से ३१ जुलाई १९८० को उनकी जन्मशती के असर पर ३० पैसे मूल्य का एक डाक टिकट किया गया । गोरखपुर के जिस स्कूल में वे शिक्षक थे, वहाँ प्रेमचंद साहित्य संस्थान की स्थापना की गई है । इसके बरामदे में एक भित्तिलेख हैं जिसका चित्र दाहिनी और दिया गया हैं । यहाँ उनसे संबंधित वस्तुओं का एक संग्रहालय भी है । जहाँ उनकी एक वक्षप्रतिमा भी है । प्रेमचंद की १२५वीं सालगिरह पर सरकार की और से घोषणा की गई कि वाराणसी से लगे इस गाँव में प्रेमचंद के नाम पर एक स्मारक तथा शोध एवं अध्ययन संस्थान बनाया जाएगा । प्रेमचंद की पत्नी शिवरानी देवी ने प्रेमचंद घर में नाम से उनकी जीवनी लिखी और उनके व्यक्तित्व के उस हिस्से को उजागर किया है, जिससे लोग अनभिज्ञ थे । यह पुस्तक १९४४ में पहली बार प्रकाशित हुई थी, लेकिन साहित्य के क्षेत्र में इसके महत्व का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसे दुबारा २००५ में संशोधित करके प्रकाशित की गई, इस काम को उनके ही नाती प्रबोध कुमार ने अंजाम दिया । इसका अंग्रेजी व हसन मंजर का किया हुआ उर्दू अनुवाद भी प्रकाशित हुआ । उनके ही बेटे अमृत राय ने कलम का सिपाही नाम से पिता की जीवनी लिखी हैं । उनकी सभी पुस्तकों को अंग्रेजी व उर्दू रूपांतर तो हुए ही हैं, चीनी, रूसी आदि अनेक विदेशी भाषाओं में उनकी कहानियाँ लोकप्रिय हुईं हैं ।

हिन्दी कहानी का विकासक्रम (उद्‌भव, विकास, वर्तमान) हिन्दी कहानियों का उद्‌भव द्विवेदी युग में हुआ । सरस्वती पत्रिका के प्रकाशन के साथ ही हिन्दी कहानी का जन्म माना गया है । १९०० ई. में किशोरीलाल गोस्वामी की इन्दुमती कहानी सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई । १९०२ ई. में भगवानदीन बी.ए. की प्लेग की चुड़ैल कहानी प्रकाशित हुई । आचार्य-रामचंद्र शुक्ल की ग्यारह वर्ष का समय, १९०३ ई. में तथा बंगमहिला की दुलाईवाली १९०७ ई. में सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई । हिन्दी के आरंभिक मौलिक

कहानीकारों में इन्हीं लेखकों का नाम आता है । आगे चलकर ये लेखक साहित्य की अन्य विधाओं की सृष्टि में प्रवृत्त हो गये और कहानी को विकसित एवं प्रतिष्ठित करने का श्रेय अन्य कलाकारों को मिला ।

१९११ ई. में जयशंकर प्रसाद की ग्राम और १९१२ में रसियाबालम प्रकाशित हुई । १९१६ ई. में प्रेमचन्द की पहली कहानी पंच परमेश्वर प्रकाशित हुई । १९२५ से १९३७ तक का समय प्रसादकाल के नाम से हिन्दी कहानी के विकास का काल रहा । बाद में प्रेमचन्द ने अपनी कहानियाँ द्वारा हिन्दी कहानी को सामाजिक संदर्भ से जोड़ दिया । प्रेमचन्द ने हिन्दी कहानी को मजबूत नींव ही नही दी, उसे कलात्मक उँचाई भी प्रदान की ।

प्रगतिवादी कहानी ने व्यक्ति की अपेक्षा समाज और सामूहिकता को महत्व दिया और पूँजीवादी सभ्यता के विरुद्ध वर्ग–संघर्ष का नारा लगाया । वर्गवदी सामाजिक चेतना के प्रबल समर्थक कहानीकारों में यशपाल, नागार्जुन, मन्मंथराय गुप्त, अमृतराय, रांगेयराघव, हंसराज, रहबर इत्यादि के नाम आते हैं । दूसरी और उपेन्द्रनाथ अश्क, भगवतीचरण शर्मा, भगवती प्रसाद बाजपेयी, सियारामशरण गुप्त, अमृतलाल नागर, चंद्रगुप्त विद्यालंकार, विष्णु–प्रभाकर, आंचलित कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु आदि ने प्रेमचन्द की परंपरा को मानवतावादी आधार देकर आगे बढो का प्रयास किया ।

सन् १९५६ के आसपास हिन्दी कहानी नई कहानी के नाम से पहचानी जाने लगी । सन् १९५५–५६ तक आते–आते नई कविता के बाद नई कहानी की चर्चा जोर पकड़ने लगी। कहानी की इस नई लहर को कल्पना, कहानी, धर्मयुग, ज्ञानोदय, लहर आदि पत्रिकाओं और विभिन्न कथागोष्ठियों ने विशेष प्रश्रय दिया । इसके प्रवर्तकों में मोहन राकेश कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव तथा मन्जू भंडारी के नाम विशेष रूप से लिए जाते हैं । सन् १९६० के बाद इस नई कहानी ने एक दूसरी ही करवट ली । अब नई कहानी के नाम पर साठोत्तरी कहानी नाम सुनाई पड़ने लगा । सन् १९६४–६५ के आस–पास एक और नया नाम कहानी

की पृष्ठभूमि पर सुनाई पड़ने लगा ङ्ख सचेनत कहानी और फिर सन् १९६८ के बाद सबको नकासी हुई अकविता के साथ अकहानी का शोर सुनाई पड़ने लगा ।

हिन्दी कथासाहित्य में प्रेमचन्द का स्थान

प्रेमचन्द हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठित उपन्यासकार एवं सफल कहानीकार हैं । उनका यह कथासाहित्य हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि है । उनके इस साहित्य को देखने परखने के लिए हिन्दी के अन्य कथाकरों की पृष्ठभूमि स्पष्ट कर प्रेमचंद से उनकी तुलना करना आवश्यक था । इसलिए मैंने इस अध्याय में हिन्दी कथासाहित्य का परिचय देकर उसमें प्रेमचंदजी का स्थान निर्धारित करने का प्रयास किया हैं ।

हिन्दी का कथासाहित्य कब विकसित हुआ उसका निश्चित कर पाना कठिन कार्य है, फिर भी प्राचीन काल के आख्यान और लोककथाओं से उसका आविर्भाव हुआ माना जाता हैं । लेकिन जिसे शुद्ध रूप से हिन्दी कथासाहित्य कहा जा सके ऐसी रचनाएँ खड़ीबोली हिन्दी के विकास के साथ लिखी गई । इसलिए हिन्दी कथासाहित्य का वास्तविक सूत्रपात खड़ीबोली गद्य के विकास के साथ माना जाना चाहिए । सन् १८५० के आसपास भारतेन्दु हरीशचंद्र और उनके साथी लेखक लाला श्री निवासदास के उपन्यास परीक्षागुरु से लेकर वर्तमान सुविकसित उपन्यास साहित्य तक और किशोरीलाल गोस्वामी की इन्दुमती कहानी से लेकर वर्तमान नई कहानी तक की लम्बी यात्रा तक हिन्दी कथासाहित्य विस्तृत फलक में फैला हुआ हैं । हिन्दी कथासाहित्य के विकास क्रम में प्रारंभ से आजतक काफी नाम लिए जा सकते हैं ।

उपन्यासकार देवकीनंदन खत्री, किशोरीलाल गोस्वामी, पं. लज्जाराम, प्रेमचंद, प्रसाद, कौशिकजी, वृंदावनलाल वर्मा, पाण्डेय बेचेनशर्मा उग्र, जैनेन्द्रकुमार, भगवतीप्रसाद

बाजपेयी, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, यशपाल, अज्ञेय, भगवतीचरण वर्मा, हजारीप्रसाद द्विवेदी, निराला, रेणु, अश्कजी, डॉ. देवराज इत्यादि ।

कहानीकार किशोरीलाल गोस्वामी, प्रसाद, प्रेमचंद, गुलेरीजी, कौशिकजी, वृंदावनलाल वर्मा, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, भगवतीप्रसाद बाजपेयी, हृदयेश, यशपाल, अश्कजी, भगवतीचरण वर्मा, विष्णु प्रभाकर, अमृतलाल नागर, निराला, रांगेयराघव, निर्मल वर्मा, कमलेश्वर, मोहन राकेश, मन्नू भंडारी, ज्ञानरंजन, रेणु, रवीन्द्र कालिया, गोविंद मिश्र इत्यादि ।

इन सभी कथाकारों में प्रेमचन्द का नाम चिर स्मरणीय हैं । उन्होंने अपने उपन्यास एवं कहानियों से अपना एक अलग युग स्थापित किया हैं । उनकी कहानियों को पढकर हम उनकी कहानी के रूप और शैली को देखते हुए उसे मौलिक कह सकते हैं । उनकी कहानियों में गांधीवाद का ज्यादा प्रभाव दिखाई पडता है । कला की दृष्टि से ये कहानियाँ काफी महत्वपूर्ण हैं । प्रेमचंद को अपने व्यक्तिगत अनुभव के द्वारा विभिन्न प्रांतो के रीतिरिवाज, आचार-विचार, सामाजिक तथा राजनीतिक भावनाओं की अच्छी जानकारी प्राप्त थी, इसलिए उनकी कहानियों में सप्रसंग इनका यथार्थ चित्रण देखने को मिलता है, उन्होंने वातावरण एवं प्रकृति को सजीव रूप प्रदान किया हैं । अपने सिद्धांतो को जहाँ उन्होंने मानवीय भावनाओं का चित्रण किया है वहाँ कहानियाँ ज्यादा संवेदनशील बन पड़ी हैं । स्त्री सहज भावनाओं का मार्मिक चित्रण उनकी कहानियों का मुख्य आकर्षण हैं ।

अध्याय–१

समस्या और समस्या प्रतिपादन

समस्या और समस्या प्रतिपादन

१.२ **समस्या प्रतिपादन :** प्रेमचंद की कहानियों में निहित शिक्षा

१.३ **पदो और संकल्पनाओं की परिभाषा :** नहित शिक्षा शोधार्थी ने इस शोध में प्रेमचन्द की कहानियों में विधमान शिक्षा को जानने का प्रयास किया है ।

१.४ **हेतु :** शोध अध्ययन के उदेश्य निम्नलिखित है ।

- प्रेमचन्द की कहानियों में निहित जीवन मूल्य जानना ।
- प्रेमचन्द की कहानियों में निहित शैक्षिक मूल्य जानना ।
- प्रेमचंद की कहानियों में निहित वास्तविक भारत को जानना ।

१.५ **संशोधन प्रश्न :** इस शोध अध्ययन के संसोधन प्रश्न निम्नलिखित है ।

१. प्रेमचन्द की कहानियों में निहित जीवन मूल्य क्या हैं ।

२. प्रेमचन्द की कहानियों में निहित शैक्षिक मूल्य क्या है ।

३. प्रेमचन्द की कहानियों में वास्तविक भारत का कैसा चित्र है ।

१.६ **संशोधन समस्या का महत्व :** निम्नलिखित कारणों से शोधार्थी ने समस्या का चयन किया है ।

- प्रेमचन्द मानव भावनाओं के अद्‌भुत चितेरे थे । प्रेमचन्द की कहानियों व उपन्यास जीवन मूल्य के बारे में सिखाते हैं और प्रेरित करते हैं ।
- शोधार्थी की मातृभाषा हिन्दी होने की वजह से वह उनकी कहानियाँ व उपन्यास पढती हूँ । वह बहुत प्रभावित करते है ।

- उनकी कहानियाँ उपदेशात्मक होती हैं । जिससे चुनौतियों का सामना करने की हिम्मत मिलती है ।
- उनकी कहानियों में जीवन को एक अलग तरीके से देखने की उत्साह नजर आता हैं । जिसमें भावात्मक संबंध स्थापित होते है ।
- प्रेमचन्द की कहानियाँ प्रेरणादायी है ।
- इन कारणों से शोधार्थी प्रेमचन्द की कहानियों पर शोध करने का निश्चय किया ।

१.१ संशोधन परिसीमन :

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने प्रेमचन्द की कहानियो में विद्यमान शिक्षा तक ही अपने आप को सीमित रखा है । उसने प्रेमचन्द की कहानियों की अन्य विशेषताएँ जैसे भाषाशैली, सामाजिक वर्णन का अध्ययन करने का प्रयास नहीं किया है । इसके अतिरिक्त प्रेमचन्द के विशाल कथासागर से शोधार्थी ने कुछ कहानियों का चयन उनमें विद्यमान शिक्षा को जानने के लिए किया हैं ।

१.२ आगामी अध्यायों का आयोजन :

यह संशोधन ५ अध्यायों में विभाजित हैं । जिस का वर्णन निम्नलिखित हैं ।

प्रथम अध्याय :

इसमें शोधार्थी ने प्रेमचन्द के जीवन का संक्षेप्त परिचय समस्या प्रतिपादन, पदों एवं संकल्पनाओं की परिभाषा, सैद्धांतिक व्याख्या, शोध अध्ययन के उदेश्य, शोध प्रश्न, संशोधन समस्या का महत्व, संशोधन परिसीमन, आगामी अध्यायों के आयोजन का वर्णन किया है ।

द्वितीय अध्याय : सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन :

इसमें शोधार्थी ने प्रस्तावना व समीक्षा के महत्व का वर्णन किया हैं । समस्त अध्ययन को दो भागों में विभाजित किया हैं ।

(१) उपन्यास (२) काव्य

तृतीय अध्याय : संशोधन प्रविधि :

इसमें शोधार्थी ने शोध में प्रयुक्त होनेवाली विधि का वर्णन किया हैं ।

चतुर्थ अध्याय :

विषय वस्तु विश्लेषण इसमें शोधार्थी ने प्रेमचन्द की कहानियों का उनके शैक्षिक महत्व को जानने के लिए विश्लेषण किया है ।

१.३ पंचम अध्याय :

इसमें शोधार्थी ने प्रेमचन्द की कहानियों से शैक्षिक मूल्यों का वर्णन किया हैं ।

१.४ उपसंहार :

इस प्रकार प्रथम अध्याय में शोधार्थी ने प्रेमचन्द का जीवन परिचय समस्या के हेतु शोध प्रश्न और समस्या के महत्व का वर्णन किया है । इस के बाद द्वितीय अध्याय में शोधार्थीने सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन किया हैं ।

अध्याय : २

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय : २

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

२.१ प्रस्तावना

२.१.१ कवियों और उपन्यासकारों पर शोध

२.१.२ कहानीकारों पर शोध

२.१.३ नाटककारों पर शोध

२.२ उपसंहार

अध्याय : २

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

२.१ प्रस्तावना :

प्रस्तुत अध्याय में शोधार्थी ने समीक्षा प्रस्तुत की हैं । समीक्षा का शोध के क्षेत्र में अत्यधिक महत्व हैं । क्योंकि इन शोध प्रविधि का ज्ञान होता हैं । शोधार्थी ने दस समीक्षाओं का संकलन किया हैं । इन्हे वर्गो ने विभाजित किया हैं । कहानीकारो, उपन्यासकार, कवियों, नाटकारों पर शोध ।

चेतना का अनुशीलन काव्य के सन्दर्भ में ।

संशोधक :

शोधकत्री ज्योत्सनाने प्रसाद की मूल्यवरक चेतना का अनुशीलन : काव्य के सन्दर्भ में पर शोधकार्य किया है । प्रस्तुत संशोधन के हेतु निम्न है ।

प्रसाद की मूल्यवरक चेतना का अनुशीलन : काव्य के सन्दर्भ में निहित शैक्षिक मूल्य जानना । प्रसाद की मूल्यपरक चेतना का अनुशीलन काव्य के सन्दर्भ में वास्तविक भारत को जानना ।

प्रस्तुत शोध में संशोधन प्रश्न निम्न है ।

प्रसाद की मूल्यपरक चेतना का अनुशीलन : काव्य के सन्दर्भ में निहित जीवन मूल्य क्या है । प्रसाद की मूल्यपरक चेतना का अनुशीलन काव्य के सन्दर्भ में वास्तविक भारत का कैसा चित्र है ।

मेथडोलोजी : प्रस्तुत संशोधन में विषय वस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है ।

प्रस्तुत शोध का परिणाम निम्न है । :

प्रसाद की मूल्यपरक चेतना का अनुशीलन : काव्य के सन्दर्भ में अंतत यही परिणाम निकलता है कि छायावाद के सुप्रसिद्ध रचनाकार जयशंकर प्रसाद की कृति कामायनी का इसीलिए शाश्वत महत्व है क्यों कि रचनाकार का व्यक्तित्व और उसका जीवनदर्शन जितना उदात्त, उदार और परिष्कृत होगा, उसकी रचनाधार्मिता भी तद्नुरूप ही होती है ।

प्रसादजी की दृष्टि आशावादी एवं आस्थावादी है । प्रेम, आशा, विश्वास, आस्था, करूणा आदि ऐसे जीवनमूल्य हैं, जिन्हें प्रसाद ने कहीं विस्मृत नहीं किया और मानव के उत्तरोत्तर विकास के लिए इनका अपनी काव्यकृतियों में स्थान पर मूर्त्तीकरण किया हैं :

जैसा उनका उदार व्यक्तित्व था, वैसा ही उनका उदार और व्यापक जीवन बोध था। महादेवीने उन्हें एक ऊँचा सीधा देवदारु की संज्ञा दी थी । डॉ. पूरन चन्द्र टण्डन ने उन्हें दिव्यदृष्टा समीक्षक तथा माँ सरस्वती का लाडला पुत्र कहा है । उनका कथन दृष्टव्य है, भाव, विचार तथा दर्शन की चरम परिणति के इस ब्रह्म-शब्द-स्रष्टा ने जीवानुभवों के समस्त सुख, दुःख के प्रसंगो से प्रेरित होकर भाविष्यत के मानवीय अस्तित्व के लिए अपने अमर सन्देश को चिरन्तन एवं शाश्वमत मूल्यवत्ता प्रदान की । भारत के सांस्कृतिक सत्यों, नैतिक मूल्यों के ठोस निष्कर्षो और पौराणिक-ऐतिहासिक संकल्पों को मनोवैज्ञानिक अन्वेषण द्वारा अनुभूति और चिन्तन का विषय बनाकर अमूल्य मन्तव्य, चिरंजीवी मानदण्ड तथा अखण्ड प्रतिज्ञाओं के बृहत्तर मूल्यों से भरपूर अक्षय भण्डार देनेवाली इस अपराजेय संकल्पशक्ति से भारतीय साहित्य का इतिहास कभी ऋण नहीं हो सकता । प्रसाद एक सच्चे कलापारखी और तत्वचिन्तक थे, इसलिए उनके विविध सृजन-साहित्य में वह चिन्तन पूर्ण परिपाक के साथ विद्यमान है । श्रद्धा, मधूलिका, अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त आदि रचनाओं के माध्यमों से उनका चिन्तन सदैव मुखरित हुआ है ।

जहाँ तक प्रसाद के काव्य के कलापक्ष की बात हो तो कहा जा सकता है कि उनकी भाषा, उनकी मूल्यपरक रचनाधर्मिता के सर्वथा अनुरूप रही है । वह उनके व्यक्तित्व की ही तरह सुसंस्कारित तथा भारतीयता के भावों से मुखरित और समृद्ध है । चित्रात्मकता उनकी भाषा की विशेषता है । लाक्षणिक एवं व्यंजनात्मक पद्धति उन्हें प्रिय रही है । प्रसाद के शिल्प में अमूर्त तत्व भी मूर्तित हो जाते हैं । कल्पना भी सत्य बन जाती है । व्यक्ति, पदार्थ या दृश्य जीवन्त हो जाते हैं । उनकी उर्वर कल्पना ने उनके काव्य को सौन्दर्य तथा लावण्य प्रदान किया है । प्रसाद के प्रकृतिपरक बिम्ब एवं प्रतीक, मानवीय बिम्ब एवं प्रतीक जीवन-मूल्यों की पीढिका निर्मित करते हैं । वे रससिद्ध रचनाकार थे । भारत की सांस्कृतिक विरासत के प्रति प्रसाद को आस्था थी, और उसे वे काव्य के माध्यम से वर्तमान के मनुष्य-समाज तक पहुँचना चाहते थे और उसके भविष्य को आनन्दय, मंगलमय बनाना चाहते थे । अत: उन्होंने अपनी रचनाधर्मिता को एक लक्ष्य की और, एक मूल्यधर्म की दिशा की और प्रेरित किया तथा द्धन्द्, रस, गुण, अलंकार आदि ने उस लक्ष्य को मूर्तित करने के लिए उनके काव्य संसार को सुसज्जित कर दिया । इस प्रकार भाव, भाषा, शैली एवं सम्पूर्ण प्रस्तुति की दृष्टि से प्रसाद का काव्य मूल्यकेन्द्रित रहा है और मानवीय बोध से समपृक्त रहा है ।

२.१.२ कहानीकारों व उपन्यासकारों पर शोध :

यशपाल की कहानियाँ और नारी : एक अध्ययन ।

शोधकर्ता कल्पेश प्रजापति ने यशपाल की कहानियाँ और नारी : एक अध्ययन पर शोध कार्य किया ।

प्रस्तुत संशोधन के हेतु निम्न हैं ।

१. यशपाल की कहानियाँ और नारी :एक अध्ययन में निहित जीवन मूल्य जानना ।

२. यशपाल की कहानियाँ और नारी : एक अध्ययन में निहित शैक्षिक मूल्य जानना ।

३.	यशपाल की कहानियाँ और नारी : एक अध्ययन में वास्तविक भारत को जानना ।

प्रस्तुत संशोधन में प्रश्न निम्न हैं ।

१.	यशपाल की कहानियाँ और नारी : एक अध्ययन में निहित जीवन मूल्य क्या है ।

२.	यशपाल की कहानियाँ और नारी : एक अध्ययन में निहित शैक्षिक मूल्य क्या है ।

३.	यशपाल की कहानियाँ और नारी : एक अध्ययन में वास्तविक भारत का कैसा चित्र है ।

मेथडोलोजी :

विषयवस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है ।

परिणाम : प्रस्तुत शोध का परिणाम निम्न हैं ।

यशपालजी हिन्दी साहित्य में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है, उन्होंने उपन्यास कहानी, आत्मकथा, निबन्ध इत्यादि विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है । यशपालजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी रचनाकार थे इसलिए वे साहित्य के माध्यम से समाज के प्रति अपना दायित्व बखूबी निभा सके हैं ।

वे स्वभाव के उग्र होने के कारण वे स्वातंत्र्य संग्राम में भगतसिंह और चन्द्रशेखर आजाद के साथ जुड़ गये । जेल में रहने के बावजूद साहित्य से हंमेशा कार्यरत रहे । कुल मिलाकर १८ संग्रहो में उनके साहित्य को देखा जा सकता है ।

यशपाल की कहानियाँ और नारी : वर्तमान साहित्य में प्रगतिवाद के आविर्भाव के साथ नारी स्वातंत्र्य एवं नारी अधिकार को अपने साहित्य का विषय बनानेवाले कई

साहित्यकार हमारे सामने आए लेकिन उनमें से कुछ साहित्यकार ही नारी की समस्याओं को सफलतापूर्वक हमारे सामने मुखरित कर पाए है ।

वास्तव में यशपाल का हिन्दी साहित्य जगत में प्रवेश हुआ उसका प्रमुख कारण कहानी ही है । प्रेमचन्द के बाद यदि किसी कहानीकार को प्रसिद्धि प्राप्त है तो वे यशपाल ही है । कहा गया है कि साहित्य को कोई भी विधा निरुदेश्य नहीं होती और इसी कथन का स्वीकार करते हुए यशपाल ने अपना साहित्य–सृजन किया है ।

जहाँ तक नारी का सवाल है यशपाल ने अपने कहानी साहित्य में नारी को प्रमुख चार प्रकार से चित्रित किया है ।

१. भावनाशील नारी　　२. वेश्या नारी

२. भोग्या नारी　　४. प्रगतिशील नारी

१. भावनाशील नारी :

यशपालने अपनी कहाँनियों में कई नारी पात्रों की ऐसी कल्पना की है जो भावना–प्रधान अक्रील की युवती, नीरस की सविता, आदि स्त्री पात्र भावनाशील नारी के भावों का चित्रण करने में समर्थ है । यशपालने इनके माध्यम से स्वयं की भावनाओं को पाठकों में बहाया है ।

२. वेश्या नारी :

अपना या परिवार का पेट पालने के लिए विवश होकर नारी को अपना शरीर बेचना पडता है । वे शौक से नहीं मजबूर होकर वेश्या का व्यवसाय करती है । फिर भी यशपाल के ऐसी नागरीको अपने चारित्रिक पहलू के बावजूद अपना नैतिक अध:पतन नहीं होने देती । वे

ईमानदारी से काम लेती है । वे किसी के आगे अपना हाथ भीख माँगने के लिए नहीं फैलाती।

३. भोग्या नारी :

भोग्या नारी पात्र पुरुष के हाथों की कठपुतली बनकर उसके ईशारों पर नाचने को मजबूर दिखाई देती है, उनका अपना व्यक्तित्व नहीं, अपना स्वार्थ पुरुष पत्नी को भोग्य मानकर अपनी निजी सम्पति के रूप में उसका उपयोग करता है । उसे अपने इशारों पर नचवाता है । यशपाल ऐसी नारियों को उनकी पहचान देना चाहते है । उनको एक व्यक्तित्व देना चाहते है ।

४. प्रगतिशील नारी :

यशपालजी की कहानियों में जहाँ भावनाशील नारी, वेश्या नारी तथा नारी मिल जाती है वैसे ही प्रगतिशील नारी तथा ऐसी नारी समाज के अन्याय के सामने वे अपना अवाज उठाती हैं । ऐसी नारी टूट कर बिखर जाने से हिचकती नहीं परन्तु किसी के सामने झुकना उन्हें बिलकुल पसन्द नहीं है ।

यशपाल ने अपनी कहानियों में नागरिक एवं ग्रामीण दोनों परिवशे से जुड़े रहे होए सो नारी जीवन के प्राय: हर पहलू को उन्होंने छूने का प्रयास किया है तथा उनकी वेदना को अपनी वेदना समझकर उन्हें एक निष्कर्ष पर ले जाने का प्रयास किया हैं ।

हरिवंशराय बच्चन के काव्य में सामाजिकता ।

श्री सुभाश बुधाजी वाघ ने हरिवशंराय बच्चन के काव्य में सामाजिकता पर शोधकार्य किया है ।

प्रस्तुत संशोधन के हेतु निम्न है ।

* हरिवशंराय बच्चन के काव्य में सामाजिकता में निहित जीवन मूल्य जानना ।
* हरिवंशराय बच्चन के काव्य में सामाजिकता में निहित शैक्षिक मूल्य जानना ।
* हरिवंशराय बच्चन के काव्य में सामाजिकता में वास्तविक भारत को जानना ।

प्रस्तुत शोध में संशोधन प्रश्न निम्न हैं ।

१. हरिवंशराय बच्चन के काव्य में सामाजिकता में निहित जीवन मूल्य क्या है ।

२. हरिवंशराय बच्चन के काव्य में सामाजिकता में निहित शैक्षिक मूल्य क्या हैं ।

३. हरिवंशराय बच्चन के काव्य में सामाजिकता में वास्तविक भारत का कैसा चित्र है ।

मेथडोलोजी :

शोध प्रविधि प्रस्तुत संशोधन में विषयवस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया हैं ।

परिणाम : प्रस्तुत शोध का परिणाम निम्न है ।

हरिवशंराय बच्चन के काव्य में सामाजिकता की दृष्टि से बच्चन के काव्य का मूल्यांकन करने पर परिणाम निकलता है कि हरिवंशराय बच्चनजी अपने विशाल और समृद्ध साहित्य के आधार पर हिंदी साहित्य जगत में उच्च स्थान के अधिकारी हैं । कायस्थ कुलोत्पन्न हरिवंशराय बच्चनजी व्यक्तित्व में जहाँ सरलता, आत्मीयता, कर्मठता आदि अनेक गुण प्राप्त होते है । वहाँ वेशभूषा और बातचीत में कभी भी आडम्बर का नामोनिशान नहीं । उच्च विधा–विभूषित हरिवंशराय बच्चचनजी का जीवन संघर्षो की एक लंबी श्रृंखला बनकर रह गया है । अनेक सम्मानों–पुरस्कारों ने उनके उज्जवल यश में चार चाँद लगा दिए है ।

हरिवंशराय बच्चनजी की रचनाओं में भारतीय संस्कृति का उज्जवल रूप प्रस्तुत हुआ है । अनुभूतियों की दृष्टि से उनके साहित्य में वे विद्यमान है । उनके साहित्य का मूल भाव समाज, धर्म और राजनीति की रूढियों को तोडनेवाला अत: उसमें व्यापकता है, समन्वयात्मकता हो और मानवता का उच्चादर्श प्रस्तुत है तथा अनुभव की संपन्नता में व्यक्तिगत आनंद और लोकहित की भावना से परिपूर्ण है ।

हरिवंशराय बच्चन जी आधुनिक साहित्य के लब्धप्रतिष्ठ कवि हैं । उनका काव्य स्वस्थ, संतुलित जीवन-दर्शन से अनुस्यूत होने के कारण हिंदी साहित्य की अक्षय निधि है ।

हरिवंशराय बच्चन का काव्य अंतर्मुखता से बहिर्मुखता की और क्रियाशील रहा है । उनकी अनुभूति प्रसंगानुरूप और युगानुरुप नया रूप धारण करती रही है । हरिवंशराय बच्चन जी का काव्य अडिंग आस्था, उदम्य स्वाभिमान एवं स्वावलंबन से परिपूर्ण हैं । आँसू और मुस्कान के साथ साथे हलाहल से खिलवाड करने की उनमें आत्मिक शक्ति हो, जो निरंतर जाग्रत रहती है । हरिवंशराय बच्चचनजी के अनुसार जीवन में सुख-दु:ख, आशा-निराशा और स्वप्न-सत्य के अस्तित्व का समान महत्व है । उनकी जीवन-विषयक यह मान्यता हमे युग-युगों तक प्रेरणा देती रहेगी ।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वे मानवतावादी उदात्त जीवनादर्शो के प्रतिष्ठापक हैं । वे इस पार उसपार के नहीं मँझधार के गायक है । वे तूफान और झंझावत के कवि हैं ।

अंतत: कहा जा सकता है कि हरिवंशराय बच्चनजी के काव्य का मूल है । सामाजिकता एवं मानवतावाद उसी की अजस्त्र धारा में डूब कर उनका संपूर्ण काव्य शाश्वत हो उठा है ।

डा. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित कृषक जीवन

धनाजी सुभाष कट्टे ने डा. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित कृष्ण जीवन पर शोध कार्य किया ।

प्रस्तुत संशोधन के हेतु निम्न हैं ।

- डॉ. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित कृषक जीवन में निहित जीवनमूल्य जानना।
- डॉ. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित कृषक जीवन में निहित शैक्षिक मूल्य जानना ।
- डॉ. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित कृषक जीवन में वास्तविक भारत को जानना ।

प्रस्तुत शोध में संशोधन प्रश्न निम्न है ।

१. डॉ. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित कृषक जीवन में निहित जीवन मूल्य क्या हैं।

२. डॉ. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित कृषक जीवन में निहित शैक्षिक मूल्य क्या है ।

३. डॉ. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित कृषक जीवन में निहित वास्तविक भारत का कैसा चित्र है ।

मेथडोलोजी :

प्रस्तुत संशोधन में विषय वस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है ।

परिणाम : प्रस्तुत शोध का परिणाम निम्न है ।

डॉ. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित कृषक जीवन में अंतत यही परिणाम निकला है कि स्वतंत्रतापूर्व भारतीय किसानों की स्थिति को अंग्रेजों ने अपने काबू में रखा था । एवं स्वतंत्रता के बाद भी किसानों पर जमींदार, महान, मुखिया के दबाव के कारण किसान दरिद्री होता जा रहा है । भारतीय किसान परंपरागत संस्कार से जकडा हुआ था । जातिवाद परंपरा में उलझा हुआ किसान बंदी समान एक रहस्य बनकर रह गया । उसी का फायदा राजनीतिक दलों ने उठाया था ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद एवं आज भी किसानों में धार्मिकता का लोप नहीं हुआ है, किंतु विज्ञान और शिक्षा परिवर्तित सामाजिक व्यवस्था के कारण किसान के दृष्टिकोण और मनोभाव में परिवर्तन हो रहा है फिर भी धार्मिक कट्टरता की स्थितियों से जकडा हुआ है ।

प्रेमचंद ने होरी के माध्यम से पूरे भारतीय किसानों की प्रतिनिधित्व किया था जो एक प्रकार से आज भी प्रासंगिक है । आज भी वही परिस्थिति है जैसे होरी की थी । मुठ्ठी भर कांकर, इस उपन्यास में मुखिया प्रतापसिंह जैसे स्वार्थी/लोग गरीब किसानों की सीधी सादी मानसिकता पर घाँव लगाते है । रिश्ते का सम्बन्ध जोड़कर अपना स्वार्थ या अपने को अलग कर लेते हैं । मिश्रजीने लोकगीतों के माध्यम से किसान, मजदूरों के अन्तरिक भावनाओं को उद्घाटित किया है । जैसे पानी के प्राचीर में यह चित्र देखने को मिलता है ।

किसान खेतों में काम करते समय काम जल्दी निपटने के लिए या थकावट दूर करने के लिए गीतों को दोहराते हैं । जैसे सूखता हुआ तलाब में चेनइया ।

किसान, मजदूर हरिजन लोग आजादी के आन्दोलन में सक्रिय सहभागी हो रहे हैं, उन्हें आशा है कि आजादी मिलने पर हमारे बच्चे वेदंगे हमारे पास भी खेत होंगे । लेकिन

आज की परिस्थिति में उन्हें मजदूरी ही करन पडती है । जैसे पानी के प्राचीर में गींपति नेता, हरिजन नेता, निरबल तेली हरिजनों को अपने अधिकार के प्रति जागृत करते हैं ।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि मिश्रजीने अपने उपन्यासों में आर्थिक्पक्ष को लेकर आर्थिक शोषण किसान और लगान, जमीदारी अन्मूलन, चकबंदी, रोजीरोटी की खोज, महंगाई, अर्थ विवाद और दहेज, अर्ध और बढती जनसंख्या आदि तत्वों को लेकर उपन्यासकारोने अपने उपन्यासों में महत्वपूर्ण स्थान दिया हैं ।

राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में नारी चित्रण

शोधकर्त्री श्रीमती ममता जोशी ने राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में नारी चित्रण पर शोधकार्य किया हैं ।

प्रस्तुत शोध के हेतु निम्न हैं ।

- राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में नारी चित्रण में निहित जीवन मूल्य जानना ।
- डॉ. राजेन्दृ यादव के उपन्यासों में नारी चित्रण में निहित शैक्षिक मूल्य जानना ।
- डॉ. राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में नारी चित्रण में वास्तविक भारत को जानना ।

प्रस्तुत शोध में संशोधन प्रश्न निम्न है ।

१. डॉ. राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में नारीचित्रण में निहित जीवन मूल्य क्या है ।

२. राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में नारी चित्रण में निहित शैक्षिक मूल्य क्या हैं ।

३. राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में नारी चित्रण में वास्तविक भारत का कैसा चित्र हैं ।

मेथडोलोजी :

प्रस्तुत संशोधन में विषयवस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया हैं ।

प्रस्तुत शोध का परिणाम निम्न हैं ।

राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में नारी चित्रण पर आधारित प्रस्तुत सम्पूर्ण प्रबन्ध के निष्कर्ष रूप में अंतत यही परिणाम निकलता है कि राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में साहित्य के क्षेत्र में उपन्यास का स्थान महत्वपूर्ण है । इसी को ध्यान में रखकर राजेन्द्र यादवने उपन्यासों के माध्यम से समाज की अनेक समस्याओं को समझाने का प्रयत्न किया है । राजेन्द्र यादव का उपन्यास साहित्य में अपना एक अलग स्थान है । उपन्यासों के माध्यम से राजेन्द्रजी ने नारी को बखूबी दर्शाया है । वे हिन्दी साहित्य में दलित और स्त्री विमर्श के प्रमुख पैरोंकारों में से है ।

स्वतन्त्रता के बाद नारी शिक्षा पर जोर दिया गया । जिससे नारी जीवन के अन्धकार भेर मन के दरवाजे पर शिक्षा रूपी ज्योतिने दस्तक दी और नारी को अपने वास्तविक व्यक्तित्व की झलक दिखी । समाज द्वारा किए गए अत्याचारों को चुपचाप सहनेवाल नारी के मन में विद्रोह की चिंगारियाँ सुलग उठी । जिससे सामाजिक व्यवस्था में पुराने ढाँचे हिल गए । अब तक जो नारी पुरुष और परिवार की प्रगति मैं ही अपना जीवन ढूँढती थी और अपना सब कुछ उसी पर न्यौछावर कर देती थी, आज वही अपने स्व के विकास की तरफ उन्मुख हो उठी, जो अब तक पुरुष-निर्मित नैतिक मूल्यों के पथ पर ही चलती आ रही थी वही नारी अब स्वनिर्मित मापदण्डों को सामने रखकर जीवन पथ पर आगे बढने लगी । साहित्य में नारी संबंधी स्थितियों को अभिव्यक्ति मीली । कथाकार राजेन्द्र यादव ने कथा मे नारी विषय स्थितियों के संबंध में जो विचार व्यक्त किये हैं, उनका सीधा संबंध समाज से है। नारी शिक्षा, दहेज प्रथा, अनमेत विवाह, पतिव्रत धर्म, मर्यादा, पालन तथा समान अधिकारों की मांग आदि स्थितियों का राजेन्द्र जीने अपने साहित्य में विस्तृत वर्णन किया है। उनके उपन्यासों में नारी की विभिन्न स्थितियाँ इस रूप में मुखरित हुई हो, चाहे वे स्थितियाँ पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक या अन्य कोई हो इन्होंने मानव जीवन के

विभिन्न क्षेत्रों से कथानक का चयन कर नारी संबंधी स्थितियों को अपने पात्रों के माध्यम से व्यक्त किया है । राजेन्द्र यादव की विशेषता रही है कि वे जिस स्थितियों का निरूपण करते हैं । गहराई से करते है । जिस प्रकार राजेन्द्र यादवने अपने उपन्यासों में नारी चित्रण किया है।

जनार्दन राय नागर राजस्थान विधापीठ उदयपुर पी.एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोधकत्री नीलम मेहताने डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनगार के सामाजिक उपन्यासों का गवेषणात्मक अनुशीलन पर शोधकार्य किया है ।

प्रस्तुत संशोधन के हेतु निम्न हैं ।

- डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर के सामाजिक उपन्यासों में निहित जीवन मूल्य जानना ।
- डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर के सामाजिक उपन्यासों में निहित शैक्षिक मूल्य जानना ।
- डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर के सामाजिक उपन्यासों में वास्तविक भारत को जानना ।

प्रस्तुत शोध में संशोधन प्रश्न निम्न हैं ।

१. डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर के सामाजिक उपन्यासों में निहित जीवन मूल्य क्या है ।

२. डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर के सामाजिक उपन्यासों में निहित शैक्षिक मूल्य क्या है ।

३. डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर के सामाजिक उपन्यासों में वास्तविक भारत का कैसा चित्र है ।

मेथडोलोजी :

प्रस्तुत संशोधन में विषयवस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया है ।

परिणाम : प्रस्तुत शोध का परिणाम निम्न हैं ।

डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर पर आधारित प्रस्तुत सम्पूर्ण प्रबन्ध के निष्कर्ष रूप में अंतत यही परिणाम निकलता है कि डॉ. भटनागर के सामाजिक उपन्यासों में पाँचो उपन्यास नायिका प्रधान और ने नायिकाएँ अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्ष कर उसका विरोध करती है । तथा समाज व प्रशासन से अपने हक के लिए लडती है । और न्याय भी माँगती है । भटनागर जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से तात्कालीन वातावरण को एकदम सजीव बना दिया हैं । भटनागर जीवन चिंतन की जितनी गहराई वह उनके समकालीन उपन्यासों में कम नजर आती हैं । विविध विषयों को लेकर लिखे गए उनके उपन्यासों में वर्तमान संदर्भो की जितनी गहराई हैं वह उनके समकालीन उपन्यास में कम नजर आती हैं ।

डॉ. भटनागर भी अपने उपन्यास कला के इस लक्ष्य में पूर्णत सफल रहे हैं । डॉ. भटनागर के उपन्यासों का लक्ष्य स्पष्ट परिलक्षित ही सुदृढ क्यों न हो लेकिन दृढ इच्छा शक्ति और प्रबल आत्मविश्वास से युक्त मानव को कभी भी पराजित नहीं कर सकती ।

अन्तत: डॉ. भगवतीलाल व्यास के शब्दों में कह सकते है कि डॉ. भटनागर के उपन्यासों में सामाजिक राजनैतिक, एतिहासिक कथानकों का समावेश है वस्तुत: कोई भी लेखक अपने परिवेश से लेकर अच्छा सृजन नहीं कर सकता ।

डॉ. भटनागर के लेखक की सबसे बडी विशेषता यह है कि वे अपने परिवेश को केवल चित्रित ही नही करते बल्कि पूरी तरह रंग देते हैं ।

डॉ. भटनागर मुख्य रूप से मध्यमवर्गीय समाज चेतना के रचनाकार है । वे मूलत: मनुष्य मनुष्यता के पक्षधरता है । वे आदमी के अन्दर कुण्डली मारकर बैठे हुए भय, अकर्मण्यता और पलायनवादिता को ललकारते हुए संघर्ष के लिए तैयार रहते है । चुंकि लेखक किसी पार्टी विशेष से जुडा हुआ नहीं है । वह जन मन का संरक्षक है और जनता की बात जनता तक पहुँचाना चाहता हैं । इस दृष्टि से लेखक कोई लाग लपेट नही रखना चाहता

है । डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर का उपन्यास लिखने का यही कारण था । अत: इस प्रकार स्पष्ट होता है कि डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर हिन्दी साहित्य के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं ।

डॉ. शंकरशेष के नाटकों में सामसामयिकता

प्रा. दिनेशकुमार भीमजीभाई कापडिया ने डॉ. शंकरशेष के नाटकों में समसामयिकता पर शोधकार्य किया ।

प्रस्तुत संशोधन के हेतु निम्न है ।

१. डॉ. शंकरशेष के नाटकों में समसामयिकता में निहित जीवन मूल्य जानना ।

२. डॉ. शंकरशेष के नाटकों में समसामयिकता में निहित शैक्षिक मूल्य जानना ।

३. डॉ. शंकरशेष के नाटकों में समसामायिको में वास्तविक भारत को जानना ।

प्रस्तुत शोध के संशोधन प्रश्न निम्न हैं ।

१. डॉ. शंकरशेष ने नाटकों में समसामायिकता में निहित जीवन मूल्य क्या हैं ।

२. डॉ. शंकरेशष के नाटकों में समसामायिकता में निहित शैक्षिक मूल्य क्या है ।

३. डॉ. शंकरशेष के नाटकों में समसामयिकता में वास्तविक भारत का कैसा चित्र है ।

मेथडोलोजी (शोधप्रविधि) :

प्रस्तुत संशोधन में विषय वस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है ।

परिणाम : प्रस्तुत शोध का परिणाम निम्न हैं ।

डॉ. शंकरशेष के नाटकों में समसामयिकता में नाटक साहित्य की सबसे प्रमुख और प्राचीन साहित्य विधा हैं । भारतीय नाटयशास्त्र के प्रणेता आचार्य भरतमुनि ने नाटक को

सभी काव्य प्रकारों में श्रेष्ठ कहा है । काव्येषु नाटकं रम्यम् तथा काव्येषु नाटकें श्रेष्ठम कहकर उसे पंचमवेद से अभिहित किया है ।

डॉ, शंकरशेष स्वातन्त्रोत्तर हिन्दी नाटयकारों में सशक्त हस्ताक्षर माने जाते हैं । उनकी समूची जिन्दगी नाटक की बुनियाद पर खड़ी है । उनकी जीवनए व्यक्तित्व एवं कृतित्व सब में नाटक एक अभिन्न तत्व के रूप में उपस्थित होता है । कला, संगीत, नाटय और स्वाभिमान से सम्पन्न हिन्दू संमुक्त परिवार की कर्मढता और रुढियों के बीच उनके व्यक्तित्व का संस्कार हुआ है ।

धर्म के नाम पर पडोसी राष्ट्र के प्रति जनता को धर्मांध बनाकर उसका ध्यान अन्यत्र आकर्षित करने की शासकों की क्रुर पृवृत्ति प्रधान रही है । पोस्टर, कालजयी आदि नाटक उक्त कथ्य के परिचायक हैं । सर्जन करनेवाले कलाकार कों निर्बन्ध कलाभिव्यक्ति के लिए अपनेचारों और से जुझना पडता है । कलाकार की आत्मा उसके कलाशिल्प में बोलती है । अत: उसकी प्रकृति सहज ही स्वाभिमानी होती है ।

नाटयकार ने समसामयिकता के बदलते सन्दर्भो को पूर्ण तत्परता से नाटयसाहित्य में प्रतिष्ठित किया है । सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक-परिवर्तित परिवेश के चित्रण के साथ साथे नाटयकार की प्रतिबद्धता समसामयिक बोध को व्यक्त करती है । डॉ, शंकरशेष ने नाटको को विस्तृत क्षेत्र प्रदान करते हुए सदा नित-नवीन विषयों को लेकर नाटय-सृजन किया हैं । विषयगत समसामयिकता की दृष्टि से उनकी नाटय-कृतियों में तात्कालीन सामाजिक-आर्थिक ऐतिहासिक-पौराणिक मिथकीय एवं समस्या प्रधान आदि का यथार्थ चित्रण हैं ।

नाटय-शिल्प की दृष्टि से भी डॉ. शंकर शेष के समस्त नाटय पूर्ण और सफल है । शिल्प-विधान में नयापन लोग के लिए समसामायिक प्रचलित प्रवृत्तियों का प्रयोग

नाटककारने सफलतापूर्वक किए है । ऐतिहासिक पौराणिक कथानक का इस्तेमाल सर्वथा नव्यरुप में किया है ।

यही कारण है कि डॉ. शेषजी के नाटक मंच की एक विशिश्ट पहचान कायम करने में सफल हुए हैं ।

शरद जोशी कृत जादु की सरकार में व्यंग्यवर शोधकार्य किया ।

शोधकर्ता कथिरीया काजल एल. ने शरद जोशी कृत जादु की सरकार में व्यंग्य पर शोधकार्य किया ।

प्रस्तुत संशोधन के हेतु निम्न है ।

१. शरद जोशी कृत जादु की सरकार में व्यंग्य में निहित जीवन मूल्य जानना ।

२. शरद जोशी कृत जादु की सरकार में वास्तविक भारत को जानना ।

प्रस्तुत शोध के संशोधन प्रश्न निम्न है ।

१. शरद जोशी कृत जादु की सरकार में व्यंग्य में निहित जीवन मूल्य क्या हैं ।

२. शरद जोशी कृत जादु की सरकार में व्यंग्य में निहित शैक्षिक मूल्य क्या हैं ।

३. शरद जोशी कृत जादु की सरकार में व्यंग्य में वास्तविक भारत का कैसा चित्र हैं ।

मेथडोलोजी (शोध प्रविधि) :

प्रस्तुत संशोधन में विषय वस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है ।

प्रस्तुत शोध का परिणाम निम्न है ।

शरद जोशी कृत जादु की सरकार में व्यंग्य में शरद जोशी की रचनाओं का अध्ययन करते हुए मुझै प्रतीत हुआ कि जोशीजी की रचनाओं में लघुशोध प्रबंध में शरद जोशी की तमाम रचनाओं में अभिव्यक्त मानव-समाज से संबंधित विशिष्ट तथ्यों तत्वो को प्रस्तुत कर पाना संभव नही हैं । शरद जोशी की जादु की सरकार व्यंग्यात्मक रचनाने समसामायिक भारतीय जनमानस को हिलाकर रख दिया है । उनका मेरे मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पडा । परिणाम स्वरुप मैंने दढ संकल्प कर लिया कि शरद जोशी की जादू की सरकार पर ही शोधकार्य करुँगी । सुप्रसिद्ध हिन्दी व्यंग्यकार शरद जोशी ने अपनी रचनाओं में मानव सहज अनुभूतियों को रेखांकित किया है । वर्तमान युग में मनुष्य अपने ही जीवन की आपाधावी में दोड़ रहा है । आज ऐसा प्रतीत होता है कि इस आवाधापी इन्सानियत कहीं खो गई है । शरद जोशी के व्यंग्य लेख में सिर्फ समसामयिक युग का ही चित्र नहीं हैं, बल्कि स्वतंत्रतापूर्व के युग को भी वे नजर अंदाज नहीं करते । मानव समाज और देश के प्रति उनके हृदय में गहन प्रेम हैं ।

शरीर यानि की हमारा स्वास्थऊय जब वह बिगडता है, तब हम वैदजी के पास जाते है । वैदजी हमारी बिमारी का सही निदान करके हमे कडुई औषधियाँ देते हैं । जिससे हमारी बिमारी दूर हो जाती है । उसी प्रकार समाज-सुधार करने के लिए व्यंग्य एक औषधि के समान है । व्यंग्य राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, वैयक्तिक आदि विकृतियों का पर्दाफाश करने का सफल एवं सशक्त साधन हैं ।

जोशी जी ने मंत्री, अध्यक्ष महोदय, पानी की समस्या, यदि जसलोक सरकारी अस्पताल होता जादु की सरकार तथा तीस साल का इतिहास आदि व्यंग्य रचना में राजनति पर गहरा कटाक्ष किया है ।

जोशीजी ने साहित्य को भी अपने व्यंग्य का विशय बनाया है । साहित्य पर व्यंग्य करते हुए चोरी चोरी ज्ञान नामक व्यंग्य लेख की रचना की । इसमें जोशीजी ने कहा है कि भारत में लिखी–छिपी पाठयक्रम की पुस्तके किस पर पाकिस्तानवाले ले लेते है ।

केशवचंद की पंक्तियाँ देखिए

क्यों भई

क्या किसी को घूस देकर

चांद पर कब्जा नहीं किया जा सकता ।

बेकार इतनी चांदनी यू ही फैंक देनेवाला कितना मूर्ख है ।

शरद जोशी ने व्यंग्य की आवश्यकता को समय पर जाना और अपने सही लेखन द्वारा उसे इतना सशक्त बनाया कि व्यंग्य आज साहित्य की विभिन्न विधाओं में क्षिद्र गति से प्रवेश कर रहा है । भगत ही जैसे व्यंग्य के बिना सब सूना । जोशी जी को व्यंग्य, रचना जादू की सरकार को लघुशोध प्रबन्ध को पढकर मैं इस परिणाम पर पहुँची हूँ कि ऐसे व्यंगकार विरले ही होते है उनके व्यंग्य लेखन से कोई भी क्षेत्र अपूता नहीं रह सका । व्यंग्यकारों में उनका स्थान सर्वोच्च है ।

निर्मला वर्मा के उपन्यास साहित्य में चित्रित नारी :

शोधार्थी सोनवीर सिंहने निर्मल वर्मा के उपन्यास साहित्य में चित्रित नारी पर शोध कार्य किया ।

प्रस्तुत संशोधन के हेतु निम्न है ।

१. निर्मल वर्मा के उपन्यास साहित्य में चित्रित नारी में निहित जीवन मूल्य जानना ।

२.	निर्मल वर्मा के उपन्यास साहित्य में चित्रित नारी में निहित शैक्षिक मूल्य जानना ।

३.	निर्मल वर्मा के उपन्यास साहित्य में चित्रित नारी में वास्तविक भारत को जानना ।

प्रस्तुत शोध के संशोधन प्रश्न निम्न है ।

१.	निर्मल वर्मा के उपन्यास साहित्य में चित्रित नारी में निहित जीवन मूल्य क्या है ।

२.	निर्मल वर्मा के उपन्यास साहित्य में चित्रित नारी में निहित शैक्षिक मूल्य क्या है ।

३.	निर्मल वर्मा के उपन्यास साहित्य में चित्रित नारी में वास्तविक भारत का कैसा चित्र है ।

मेथडोलोजी (शोध–प्रविधि) :

प्रस्तुत संशोधन में विषय वस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया हैं ।

प्रस्तुत शोध का परिणाम निम्न है ।

निर्मल वर्मा के उपन्यास साहित्य में चित्रित नारी में नारी शब्द नर के समानान्तर हो इसका प्रयोग स्त्रीलिंगवाची मादा प्राणियों के प्रतीक रुप में होता है, किन्तु मानव समाज में नारी शब्द इस सामान्य अर्थ में गृहीत नहीं है क्यों कि उसका स्थान नर से कहीं बढकर है । कोमलता, दृढता, स्पृहा आदि गुण नर की अपेक्षा नारी में विशेष रुप से पाए जाते है । यही नहीं आकार, शरीर, संगठन, कार्य–व्यापार एवं जीवन–चायन की विविध स्थितियों में नारी विधाता की उच्चत्तम परिकल्पना सिद्ध हुयी है । पार्वती, गार्गी, सीता, सावित्री, महारानी लक्ष्मीबाई आदि नारियाँ इन्ही आदर्शो की प्रमाण हैं ।

निर्मल वर्मा मूलत: एक कहानीकार है लेकिन उन्होंने एक उपन्यासकार के रुप में भी ख्याति अर्जित की है । वे सूक्ष्म से सूक्ष् म भावों, विचारों को अभिव्यक्त करने की अद्‌भुत

क्षमता रखते है । निर्मल वर्मा जी ने नारी को यथार्थ रुप में चित्रित किया है । उन्होंने नारी को यथार्थ रुप में चित्रित किया है । उन्होंने नारी को परम्पराओं व परम्परागत मूल्यों से अलग रखकर आधुनिक मूल्यों व समस्याओं के साथ चित्रित किया है । आज भले ही नारी के विषय में बडी बडी बातें की जा रही हो लेकिन वास्तविक स्थिति ठीक नहीं है । वह आज भी सामाजिक विरोध, शासन के द्वारा असहयोग आर्थिक पिछडापन तथा शोषण को झैल रही है । वे अपने अस्तित्व व उद्‌देश्यहीन जीवन के प्रति सोचती रहती है ।

वर्माजी ने अपने उपन्यास साहित्य में नारी को विविध रुपों में चित्रित किया है । और उसमें वे सफल भी हुए है । इस प्रकार निर्मल वर्मा के उपन्यास साहित्य में चित्रित नारी विविध दृष्टिकोण से आज की नारी का प्रतिनिधित्व करती है ।

श्री रामचरित मानस के मार्मिक कथा–प्रसंगो का मानव–मूल्यपरक अध्ययन

शोककर्तासंत अधवेशदास ने श्री रामचरित मानस के मार्मिक कथा–प्रसंगो का मानव–मूल्यपरक अध्ययन पर शोधकार्य किया ।

प्रस्तुत शोध के हेतु निम्न है ।

१. तुलसीदास की श्री राम चरित मानस के मार्मिक कथा–प्रसंगो का मानव–मूल्यपरक अध्ययन में निहित जीवन मूल्य जानना ।

२. तुलसीदासजी की श्री राम चरित मानस के मार्मिक कथा–प्रसंगो का मानव–मूल्य परक अध्ययन में निहित शैक्षिक मूल्य जानना ।

३. तुलसीदासजी की श्री राम चरित मानस के मार्मिक कथा–प्रसंगो का मानव मूल्य परक अध्ययन में वास्तविक भारत को जानना ।

प्रस्तुत शोध के संशोधन प्रश्न निम्न है ।

१. तुलसीदासजी की श्री रामचरित मानस के मार्मिक कथा–प्रसंगो का मानव–मूल्यपरक अध्ययन में निहित जीवन मूल्य क्या है ।

२. तुलसीदासजी की रामचरित मानस के मार्मिक कथा–प्रसंगो का मानव मूल्यपरक अध्ययन में निहित शैक्षिक मूल्य क्या है ।

३. तुलसीदासजी की रामचरित मानस के मार्मिक कथा–प्रसंगो का मानव मूल्य परक अध्ययन में वास्तविक भारत का कैसा चित्र है ।

मेथडोलोजी (शोध प्रविधि) :

प्रस्तुत संशोधन में विषय वस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है ।

प्रस्तुत शोध का परिणाम निम्न हैं ।

महापुरुष गोस्वामी तुलसीदासजी की श्री रामचरित मानस के मार्मिक कथा–प्रसंगो का मानव–मूल्यपरक अध्ययन में मानवीय मूल्यों की मंजूषा श्रीरामचरित मानस का धर्म, मानव–धर्म एवं संस्कृति मानव–संस्कृति है । इन प्रसंगो के मानव मूल्यपरक विश्लेषण के उपरान्त हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि मानस के प्रत्येक पात्र के चरित्र में मानवीय मूल्य विद्यमान हैं, चाहे वे देव, दनुज, मनुज, पशु अथवा पक्षी किसी भी कोटि के पात्र हों । भारतीय संस्कृति में श्रीराम को विशिष्ट मानवी आदर्श के रुप में देखा जाता हैं । श्रीराम के केन्द्र में रख कर, मानव–मूल्यपरक दृष्टि से चिन्तन करने पर ज्ञात होता है कि देवगुरु बृहस्पति की श्रीराम के प्रति गम्भीरता राक्षसराज रावण के भ्राता विभीषण की श्रीराम के प्रति सकारात्मकता शबरी की श्रीराम के प्रति निष्कपटता, श्री हनुमानजी की राम के प्रति सेवापरायणता एवं जटायु की राम के प्रति निष्कप्टता एवं परोपकारिता आदि मानवमूल्य मानस में मानवीय मूल्यों की व्यापकता को प्रमाण प्रस्तुत करते है । वस्तुत: श्रीराम का

समर्थन ही मानवता का समर्थन है । तथा श्रीराम का विरोध ही मानवता का विरोध है । श्रीराम के व्यक्तित्व में मानवीय संस्कृति की अभिव्यक्ति होती है ।

वस्तुत: रामजी का आदर्श व्यक्तित्व मानवमाद्ध के लिए चरममूल्य हैं । क्योंकि श्रीराम मानवमात्र के लिए परम मूल्य है । मानव-समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना का श्रेय, श्रीरामजी के चरित्र को ही प्राप्त है । यही कारण है कि श्रीराम को नारायण के रूप में पूज्य भाव प्रदान करते हुए भी हम नर-रुप में अपने सर्वाधिक समीप देखते है । वस्तुत: मनुष्य मात्र के राम के प्रति आकर्षण का प्रमुख कारण है । रामजी का ररत्व है, न कि बहात्व । उनके जन्म-कर्म सभी मानुषी होने के कारण ही वे मानवीय मूल्यों के केन्द्र है तथा उनकी सत्ता सार्वभौमिक एवं अप्रमेय है । श्रीरामचरित मानस में गोस्वामीजी ने राम के नारायण एवं नर दोनों रुपों का प्रतिपादन प्रस्तुत कर, उन्हें मनुष्य मात्र की श्रद्धा एवं सहानुभूति का पात्र बना दिया है ।

हम श्रीरामजी के मानवीय चरित्र का जब सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन करते है तो हम पाते है कि स्वयं श्रीरामजी के चरित्र में जहाँ माता-पिता, भाई-बन्धु व अन्य परिजनों के प्रति स्नेह-मैत्री-भाव व्यक्त हुए हो वही देशकाल और पात्र के अनुसार क्रोध भी व्यक्त हुआ है । उदाहरणत: श्रीरामजी सुग्रीव वर रोष प्रकट करते है । समुदृ जब तीन दिन तक उसकी भावनाओं को नहीं समझ पाता, तो उस पर क्रोध प्रकट करते है । परशुराम लक्ष्मण-संवाद में भी श्रीरामजी को सात्विक आक्रोश प्रकट करना ही जान पडता है । श्रीरामचरित मानस मानवमूल्य परक ग्रंथ हो, इसमें समस्त प्रकार के मानवीय मूल्यों का परिदर्शन होता है । चौद वे आत्यलिक हों या धार्मिक सामाजिक हों या राजनीतिक अथवा सांस्कृतिक हो या आर्थिक पाश्चात्य एवं भारतीय मूल्यवादियों के मूल्य विषयक दृष्टिकोण को निष्कर्षत: हम पुरुषार्थ चतुष्टय के रुप में देखते है । धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष को महामानवमूल्यों के रुप में माना गया है । श्रीरामजी की भार्वत द्वारा समस्त मानस रोगों का शमन हो जाता है की

भक्ति, समस्त मानस रोगों की शमन कारक है । वही भक्ति इस महानत्तम मानवमूल्य परक ग्रंथ की चरम मानवीय मूल्य है । मानस में मानवीय मूल्यों का विपुल भण्डार है । किन्तु भक्ति को सर्वश्रेष्ठ मानवीय मूल्य के रूप में अवधारित किया है । मानस की फलश्रुति भक्ति के रुप में प्रतिपादित होती है । तथा इस मानवीय मूल्य के दर्शन मानस के प्रत्येक कोटि (देव, दानव, मानव, पशु एवं पक्षी कोटि) के पात्रों के चरित्र चित्रण में होते है । मानस में मानवीय मूल्यों की समग्रता ही मानस को मानवीय उत्कर्ष का आधार बनाती है ।

२.२ **उपसंहार :**

विभिन्न शोध प्रबन्धो के अध्ययन से शोधार्थी को शोध प्रबन्ध की प्रविधि का ज्ञान हुआ हैं । इसके बाद तीसरा अध्याय शोध प्रविधि हैं ।

तृतीय अध्याय : (३)

संशोधन योजना

तृतीय अध्याय : (३)

संशोधन योजना

३.१ प्रस्तावना

३.२ समस्या कथन

३.३ संशोधन के प्रकार

३.४ संशोधन पद्धति

३.५ शोध का आयोजन

३.६ उपसंहार

अध्याय तृतीय

संशोधन योजना

३.१ प्रस्तावना :

किसी भी शोध अध्ययन में शोध पद्वति का अत्यधिक महत्व है । इस अध्याय में शोधार्थी ने शोध अध्ययन कि विधि का वर्णन किया है ।

३.२ समस्या कथन :

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने निम्न समस्या का चयन किया है ।

प्रेमचन्द की कहानियों में निहित शिक्षा ।

३.३ संशोधन के प्रकार :

शोधार्थी को संशोधन पद्वति का चयन समस्या के आधार पर करना होता हैं । प्रस्तुत संशोधन दार्शनिक हैं क्योंकि इसमें शोधार्थी ने प्रेमचन्द की कहानियों में निहित शिक्षा को जानने का प्रयास किया है ।

३.४ संशोधन पद्धति :

इस में शोधार्थी ने विषय वस्तु का विश्लेषण कर कहानियों में निहित शिक्षा को जानने का प्रयास किया हैं । अत: विषयवस्तु विश्लेषण पद्धति का प्रयोग हुआ हैं । इस पद्वति में विषयवस्तु का विश्लेषण कर तथ्य निकालने का प्रयास किया जाता है ।

३.५ शोध का आयोजन :

प्रस्तुत शोध करने में शोधार्थी ने प्रेमचन्द की कहानियों का गहन अध्ययन किया । फिर उनका विश्लेषण करने का प्रयास किया है ऐसा करने के लिए शोधार्थी ने निम्न चरणों में कार्य किया हैं ।

प्रथम चरण :

शोधार्थी ने उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द की कहानियों का अध्ययन किया ।

द्वितीय चरण :

शोधार्थी ने प्रेमचन्द की कहानियों में स्थित शैक्षिक मूल्यों को जानने का प्रयास किया हैं ।

तृतीय चरण :

शोधार्थी ने फिर से कहानियों का अध्ययन किया और उन में विदयमान शिक्षा को कहानियों के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं । इस प्रकार शोधार्थी ने कालजयी और गाँधीवादी लेखक को कहानियों में तात्कालीन समाज के चित्र के माध्यम से पाठकों को दी जानेवाली शिक्षा को प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं ।

३.२ उपसंहार :

इस अध्याय में शोधार्थी ने संशोधन की विधि पद्धति व प्रकार का वर्णन किया हैं ।

इस के बाद के अध्याय में विषय वस्तु का विश्लेषण किया हैं ।

अध्याय : ४

प्रदत वर्गीकरण विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्याय : ४

प्रदत वर्गीकरण विश्लेषण एवं व्याख्या

४.१ प्रस्तावना

४.२.१ विषयवस्तु विश्लेषण

४.२ उपसंहार

अध्याय : ४

प्रदत वर्गीकरण विश्लेषण एवं व्याख्या

४.१ प्रस्तावना :

इस अध्याय में शोधार्थी ने प्रेमचन्द कि विभिन्न कहानियों में निहित शैक्षिक मूल्यों का विश्लेषण किया हैं । प्रेमचन्द कि कहानियॉ अपने उदार और मौलिक जीवन मूल्यों के कारण विश्वप्रसिद्ध हैं । उनकी कहानियों में निर्धन स्त्री पुरुषों कि मानवीय भावनाओं का प्रस्तुतीकरण हैं । प्रेमचन्द कि कहानियों का वर्णन निम्नलिखित हैं ।

कहानियाँ

४.२.१ विषयवस्तु विश्लेषण :

पंच–परमेश्वर

जेसे कि नाम से प्रतित होता हैं पंच परमेश्वर है । यह कहानी दो मित्रो जुम्मन शेख व अलगू चौधरी की है ।

जुम्मन शेख अपनी बुढी खाला से उनकी जायदात अपने नाम करवाकर उनके साथ बुरा व्यवहार करता था ।

पंचायत बेठने पर उसने सोचा उसका मित्र उसके पक्ष में ही निर्णय देगा । किन्तु अलगू चौधरीने न्याय का साथ देते हुए यह निर्णय दिया की जुम्मन शेख को उसकी खाला को माहवार खर्ची दे । इसके बाद अलगू चौधरी का एक बैल समभ्कूसाहूने खरीद लिया । समय पर चारा व पानी ना मिलने के कारण वह बैल जल्दी ही मर गया । समझुसाहूने बैल का मूल्य देने से मना कर दिया । पंचायत बुलाने पर सरपंच जुम्मन शेख ने भी मित्रता व

शत्रुता के भाव से उपर उठकर निर्णय दिया कि समझू की लापरवाही के कारण बेल मरा है । इस जिए उसे मूल्य देना ही चाहिए ।

निहित शिक्षा :

न्याय करनेवाले व्यक्ति को मित्रता व शत्रुता के भाव से पर होकर न्याय करना चाहिए । इस कहानी में पंचो की महानता का पता चलता है ।

ईदगाह

ईदगाह कहानी प्रेमचन्द्र की एक विख्यात कहानी है । जो बाल मनोविज्ञान का चित्रण करती है । इसमें दादी अमीना व उसके पोते हमीद का चित्रण है ।

निर्धन दादी बच्चे के माता-पिता के मरने पर उसको कलेजे से लगाकर प्यार से पालती है । ईद के अवसर पर जहाँ दूसरे बच्चें अपने माता-पिता से ईदी पाते है । वहा उसकी दादी एक आना खर्च करने के लिए देती है ।

हमीद मेले में दुसरे बच्चो को खिलौने व मिठाईयाँ खरीदते देखता है । किन्तु वह कुछ न खरीद कर अपनी दादी के लिए चिमटा खरीदता है । क्यों कि दादी का हाथ रोटी सेकते हुए जल जाता था ।

निहित शिक्षा

यह कहानी बाल मनोविज्ञान को अच्छे से दर्शाती है । बच्चे भी दूसरो की भावनाओं को समझकर उनसे सहानुभूति रखते है । उनके मन में नि:स्वार्थ स्नेह होता है वे स्वार्थ से परे होते है ।

सुभागी

इस कहानी में कथा–सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने सामाजिक घटनाओं एवं तथ्यों का सजीव चित्रण करने में सिद्धहस्त हैं ।

साधारणत: हमारे मस्तिष्क में नारी का कोमल ममतामयी अबला रूप ही उभरता है, किन्तु इस कहानी में लेखक ने एक ऐसी कर्मठ और सहनशील नारी का चरित्र–चित्रण किया है जो अपने भाई रामू के अत्याचार से तंग आकर अपने माता–पिता को लेकर अलग हो जाती है । उसकी माता लक्ष्मी और पिता तुलसी उसे बहुत प्यार करते है । वह सुभागी ग्यारह साल की उम्र में विधवा हो जाती है और उसका मन अभी बच्चा है । वह अपनी माँ से रोते हुए कहती है, "क्यों रोती हो अम्माँ में तुम्हे छोडकर कही नही जाऊँगी ।" उसकी भोली बाते सुनकर माता का दिल और भी फटा जाता है ।

उसके चाचा उसका दूसरा विवाह करवाना चाहते है । पर वह साफ मना कर देती है। और वह अपने माता–पिता की सेवा करती है । घर के सारे काम में इतनी चतुर और खेती–बारी के काम में इतनी निपुण थी कि उसकी माँ लक्ष्मी दिल में डरती की कही लडकी पर देवताओं की आँख न पड जाए । अच्छे बालकों से तो भगवान को भी प्रेम है । कुछ समय बाद उसके पिता तुलसी को ज्वर चढता है और उनकी मृत्यु हो जाती है । वह अपनी पत्नी व बेटी की जिम्मेदारी अपने दोस्त सज्जनसिंह को सोप देते है । थोड़ा समय भी नही गुजरा था कि उसकी माँ भी चल बसी ।

अब सुभागी का एक ही लक्ष्य था की उसने अपने पिता के दोस्त सज्जनसिंह से ५०० रु अंत्येष्टि करने के लिए ऋण लिया था । तीन साल कड़ी मेहनत कर के वह पूरा ऋण चुका देती है । पूरा गाँव सुभागी कि तारीफ करता है । सज्जनसिंह सुभागी को अपने

घर की बहू बना लेता है । बेटे व बहू के माथे पर हाथ रखकर आर्शीवाद देता है और सुभागी को कहता है बेटी तुम्हारा सोहाग अमर है ।

निहित शिक्षा

जहाँ पुत्र को रत्न मानकर उसके पेदा होने पर घर में जन्मोत्सव मनाया जाता था और पुत्री को पूर्वजन्म के पापों का दंड समभ्का जाता था । वह रत्न कितना कठोर निकलता है, और वह दंड कितना मंगलमय होता है यह दर्शाता है । जहाँ सुभागी जो समाज की विसंगतियों से जुझती हुई अपने कर्तव्यों का सही पालन करती है । और सब प्रकार से यह सिद्ध कर देती है कि वह पुरुषों से पीछे नहीं है ।

मंत्र

यह कहानी में एक डाँक्टर चड्ढा का चरित्र चित्रण किया है । एक बूढा व्यक्ति जिसके सात लडको में से यही एक बचा था । और वह कई दिनों से बीमार था । पर डॉक्टर साहब को गोल्फ खेलने का समय हो गया था । उन्होंने उसे कल सवेरे आओ कहकर टाल देते है । बूढे व्यक्ति ने बहुत प्रार्थना कि और कहा कि बस हुजूर एक निगाह देख ले ।' पर डाँक्टर, "यह हमारे खेलने का समय है कहकर चले जाते हैं ।" बूढा व्यक्ति सोचता था कि संसार में ऐसे भी मनुष्य होते है । जो अपने प्रमोद के आगे किसी की जान की भी परवाह नहीं करते । उस बूढे व्यक्ति का सात साल का लड़का मर जाता है । कुछ समय बाद डाँकटर साहब के लडके की बीसवीं सालगिराह थी । उसका बेटा कैलाश था । उसे साँपो को पालने, खिलाने और नचाने का शौक था । जब उनके बेटे को साँप काँटता है । सभी इलाज व्यर्थ हो जाते है तब कोई उन्हें कहता है कि साँप मंत्रवाला एक व्यक्ति इसका जहर निकाल सकता है । और वह बूढा व्यक्ति उस डॉक्टर के बेटे का जहर मंत्र के द्वारा झाड़ता है और वहाँ से बिना डाँकटर साहब को मिले चला जाता है । अंधेरे कि वजह से उसका

चेहरा सही सही नही दिखता पर डॉक्टर साहब उसे पहचान जाते है और वादा करते है कि में उसे ढूँढकर माफी मांगूगा ।

निहित शिक्षा :

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है की अगर कोई अपने साथ कितना भी बुरा व्यवहार करे अपने को अपना कर्म नहीं छोडना चाहिए । जिस प्रकार बूढे बाबाने अपना सात साल का बेटा डॉकटर के नही देखने पर खो दिया था पर वह उनके बेटे की जान बचाते है । तब जाकर डॉकटर को एहसास होता है और आत्मग्लानि होती है । इस लिए हमें हमारे कर्तव्य नहीं भूलने चाहिए ।

दो भाई

इस कहानी में मुंशी प्रेमचन्दने मातृत्व प्रेम व दो भाईयों के बीच प्रेम दर्शाया है । उसके बाद किस प्रकार ईर्ष्या और द्वेष होता है वह बताया गया हैं ।

प्रात:काल सूर्य की सुहावनी सुनहरी छूप में कलावती दोनों बेटों को जांधो पर बैठा दूध और रोटी खिलाती है । केदार बडा था । माधव छोटा । वह अपनी तोतली बोली में उस प्रार्थना की रट लगाते थे, जिसमें एक पुराने सहृदय कवि ने किसी जाड़े के सताये हुए बालक के हृदयोद्गार को प्रकट किया है

दैव-दैव घ्याम करो तुम्हारे बालक को लगता जाडा ।

माँ उन्हें चूमकर बुलाती है । उसके हृदय में प्रेम की उमंग, नेत्रों में गर्व की झलक थी। दोनों भाई बड़े हुए केदार की बुद्धि चुस्त थी । माधव का शरीर । दोनों में इतना स्नेह था। दोनों भाईयों का विवाह हुआ । केदार की वधू चम्पा अमित-मृदुभाषिणी और चंचल थी । माधव की वधू श्याम सांवली-सलोनी रुपराशि की खान थी । बडी ही मृदुभाषिणी बडी ही

सुशीला व शांत स्वभाव थी । परन्तु कलावती का मन किसी न मिला । वह दोनों से प्रसन्न और दोनों से अप्रसन्न थी । अब उसकी शिक्षा–दीक्षा का बहुत अंश व्यर्थ के प्रयत्न में व्यय होता था कि चम्पा अपनी कार्यकुशलता का एक भाग श्यामा के शांत स्वभाव से बदल ले । भाग्य की इस फूटनीतिने शनैः शनैः द्वेष का रूप धारण किया ।

माधव को धन–सम्पति की लालसा थी और केदार को संतान की अभिलाषा । दोनों बहुओं में क्रोध बढ गया । चम्पा और श्यामा समकोण बनानेवाली रेखाओं की भांति अलग हो गई । उस दिन एक ही घर में दो चूल्हे जले परन्तु भाईयों ने दोनों की सूरत न देखी और कलावती उस दिन रोती रही । कई वर्ष बीत गये । दोनों भाई जो किसी समय एक ही थाली में खाते थे अब उन्हें एक घर एक गाँव में रहना कठिन हो गया । दोनों भाई जब लडके थे, तब एक को रोते देख दूसरा भी रोने लगता था । तब वह नादान, बेसमझ और भोले थे । आज एक को रोते हुए देख दूसरा हँसता और तालियाँ बजाता । अब वह समम्कदार और बुद्धिमान हो गये थे ।

बेचारे माधव की दशा शोचनीय थी । खर्च अधिक था और आमदनी कम । उस पर कुल–मर्यादा का निर्वाह । उसके चार पुत्र थे, चार पुत्रिया और आवश्यक वस्तुएँ मोती के मोल । पूंजी लडकियों के विवाह में चली गई । वह पूरा कर्ज में डूबा हुआ था । जब वह बडे भाई से उधार लेने जाता है तो वह उसे महाजन से दिला दूँ लिखा–पढी कर लो कहता है। जब दूसरे दिन दातादयालने पूछा – रेहन लिखनेवाले का नाम ? बडे भाई बोले माधव वल्द शिवदत । और लिखाने वाले का ? केदार वल्द शिवदत । माधव बडे भाई की और चकित होकर देखा । केदार उसकी और देख न सका । बात–चीत तो किसी साहूकार की थी। भाई–भाई में अविश्वास । सभी लोग बाते करने लगे । मानो आश्चर्य की अथाह नदी में नौकाएं डगमगाने लगी ।

निहित शिक्षा :

इस कहानी से हमे यह शिक्षा मिलती है कि भले ही भाई–भाई में कितना भी मनमुटाव हो, प्यार से आपस में बैठकर सुलझाना चाहिए । जिस प्रकार केदार ने अपने भाई माधव के प्रति ८० के लिए जो अविश्वास दिखाया ऐसा नही होना चाहिए ।

माता को अपने बच्चों को गोद में बैठाकर दूध–रोटी खाते देख नेत्रों में कितना अभिमान था । वह आज लज्जित हो हृदय में शोक–संताप से वह भगवान से कहती है । “ऐसे पुत्रों को मेरी ही कोख से जन्म लेना था ।” उन्हे अपनी माँ की कोख को लज्जित नही करना चाहिए ।

बड़े घर की बेटी

बेनीमाधव सिंह गोरीपुर गाँव के जमीदार और नम्बरदार हैं । उनके पितामह किसी समय बडे धन–धान्य सम्पन्न थे । गाँव का पक्का तालाब और मन्दिर, जिनकी अब मरम्मत भी मुश्किल थी, उन्हीं के कीर्ति स्त्तम्म थे ।

कहते है दरवाजे पर हाथी झूमता था । अब उसकी जगह एक बूढी भैस थी, बेनीमाधव सिंह अपनी आधी से अधिक सम्पति वकीलों को भेट कर चुके थे । उनकी वर्तमान आय एक हजार रुपए वार्षिक से अधिक न थी । ठाकुर साहब के दो बेटे थे । बडे का नाम श्रीकृष्ण सिंह था । उसने बहुत दिनों से परिश्रम और उद्योग के बाद बी.ए की डिग्री प्राप्त की थी । अब एक दफ्तर में नोकर था । छोटा लडका लालबिहारी सिंह दोहरे बदन का सजीला जवान था । भरा हुआ मुखडा चौडी छाती । भैंस का दो सेर ताजा दूध वह उठकर सबेरे पी जाता था । श्रीकृष्ण सिंह की दशा बिलकुल विपरीत थी । इन नेत्रप्रिय गुणों को उन्होंने बी.ए. उन्ही दो अक्षरों पर न्योछावर कर दिया था । इन दो अक्षरोने उनके शरीर को निर्बल और चेहरे को कान्तिहीन बना दिया था । इसी से वेधक ग्रन्थों पर उनका विशेष प्रेम

था । आर्युवेदिक औषधियो पर उनका अधिक विश्वास था । श्रीकृष्ण अंग्रेजी डिग्री को आधिपति होने पर भी अंग्रेजी सामाजिक प्रथाओं के विशेष प्रेमी न थे । इसी गाँव में उनका बडा सम्मान था । दशहरे के दिनों में वह बडे उत्साह से रामलीला मे स्वयं किसी न किसी पात्र का पार्ट लेते थे । गौरीपुर में रामलीला के वही जन्मदाता थे । सम्मलित कुटुम्ब के तो वह एक मात्र उपासक थे । आज कल स्त्रियों के कुटुम्ब में मिल-जुलकर रहने की जो अरुचि होती है उसे वह जाति देश दोनों में हानिकारक समझते थे । यहाँ तक कि कोई कोई स्त्रियां तो उन्हे अपना शत्रु मानती थी ।

यह कहानी प्रेमचन्द की कहानियों में से एक प्रसिद्ध कहानी है । जिस में बडे घर की बेटियों में किस प्रकार धैर्य संस्कार होते है वह दिखाया गया है । बिगडी बात को संभालना उन्हें आता है वह बताया है ।

आनन्दी एक बडे उच्च कुल की लडकी थी । विशाल भवन, एक हाथी तीन कुत्ते, बाज, बजरी-शिकोर, झाड्, फानूस, आनरेरी मेजिस्ट्रेरी ऋण, जो एक प्रतिष्ठित ताल्लुकेदार के योग्य पदार्थ हो सभी विद्यमान था । नाम था भूपसिंह, बडे उदार चित्त और प्रतिभाशाली पुरुष थे । पर दुर्भाग्य से लडका एक भी न था । उनकी सात लडकियाँ थी । पहली उमंग में तो उन्होंने तीन ब्याह दिल खोलकर किए, पर जब पन्द्रह-बीस हजार रुपयों का कर्ज सिर पर हो गया, तो आँखे खुली हाथ समेट लिया । आनन्दी चौथी लडकी थी । वह अपनी बहनों से अधिक रूपवती और गुणवती थी । इससे ठाकुर भूपसिंह उसे बहुत प्यार करते थे । ठाकुर साहब बडे धर्मसंकट में थे कि इसका विवाह कहाँ करे । वह न तो यही चाहते थे कि ऋण का बोझ बढे और न यह स्वीकार था कि उसे अपने को भाग्यहीन समझना पडे । एक दिन श्रीकष्ण उनके पास किसी चन्दे का रुपया माँगने आए । भूपसिंह उनके स्वभाव पर रीझ गए और धूमधाम से श्रीकष्णसिंह का आनन्दी के साथ ब्याह हो गया । आनन्दी अपने नये घर में आई तो यहाँ का रंग-ढंग कुछ ओर ही देखा । जिसकी उसे बचपन से ही आदत पडी हुई

थी, वह यहाँ नाम–मात्र को भी न थी । किन्तु आनन्दी ने थोडे ही दिंनों में अपने को इस नई अवस्था के ऐसा अनुकूल बना लिया मानो उसे विलास के सामान कभी देखे ही न थे । आनन्दी व उसके देवर में आमने सामने कहासुनी से मन मुटाव हो जाता है । बात घर के बँटवारे तक आ जाती है । पर बिगडी बात को भावज जिसका नाम आनन्दी है संभाल लेती है । और आपस में मनमुटाव दूर होता है । तब उसका देवर आत्मग्लानि महसूस करता है । आनन्दी उसे क्षमा कर देती है । उसी समय उसके ससुर बेनीमाधव सिंह बाहर से आ रहे होते है । दोनो भाईयों को गले मिलता देखकर आनन्द से पुलकित हो उठते है और बोल उठे, “बडे घर की बेटियाँ ऐसी ही होती है ? बिगडता हुआ काम बना लेती है ।”

निहित शिक्षा :

यह कहानी हमें यह शिक्षा प्रदान करती है कि विपरित परिस्थितियों में हमें धैर्यपूर्वक विवेक से काम लेना चाहिये ।

जिस प्रकार आनन्दी ने अपनी समम्क्बुम्क से अपने परिवार को टुटने से बचाया उसी प्रकार हमें भी हमारे परिवार के साथ मिल जुलकर रहना चाहिये । यही तो संस्कार की सम्पन्नता हैं ।

डिग्री के रूपये

इस कहानी मे मुंशी प्रेमचन्द्र ने दो मित्रो का एक दूसरे से अनेक प्रकार की विषमताओं के होते हुए भी उन दोनों में घनिष्ठ मैत्री और नि:स्वार्थ विशुद्ध प्रेम दिखाया हैं । नईम और कैलाश में इतनी शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक भिन्नता थी, जितनी दो प्राणियों में हो सकती है ।

नईम एक सुसम्पन्न, उच्च पदाधिकारी पिता का एकमात्र पुत्र था । जिसे भविष्य की कोई चिन्ता न थी । कैलाश एक साधारण व्यवसायी के कई पुत्रो मे से एक था । वह भविष्य

की कल्पनाओं से विकल रहता था । नईम के लिए राज्य पद का द्वार खुला हुआ था, भविष्य में कोई सहार न था । कैलाश को अपने हाथों से कुऑ खोदकर पानी पीना था । भविष्य एक भीषण संग्राम था, जिसके स्मरण मात्र से उनका चित्त अशांत हो उठता था।

कॉलेज से निकलने के बाद नईम को शासन विभाग में एक उच्च पद प्राप्त हो गया, यधपि वह तीसरी श्रेणी में पास हुआ था । कैलाश प्रथम श्रेणी पास हुआ था, किन्तु उसे बरसों एड़ियां रगड़ने, खाक छानने और कुएँ झोकने पर भी कोई काम न मिला । यहाँ तक कि विवश होकर उसे अपने कलम का आश्रय लेना पडा । उसने एक समाचार पत्र निकाला। एक ने राज्याधिकार का रास्ता लिया । जिसका लक्ष्य धन था, और दूसरे ने सेवा-मार्ग का सहारा लिया, जिसका परिणाम ख्याति । विष्णुपुर की रियासत में हाहाकार मचा हुआ था । ठीक दोपहर के समय सैंकडो आदमियों के सामने कत्ल कर दिया गया था । खूनी भाग गया, अधिकारियों का संदेह था कि कुँवर साहब की दुष्प्रेरणा से ही यह हत्याभिनय हुआ है । इस घटना का अनुसंधान करने के लिए जिले के हाकिम ने मिरजा नईम को नियुक्त किया । नईम विष्णुपुर पहुँचा । उन्हे अपने भाग्य-निर्माण का स्वर्ण सुयोग प्राप्त हुआ । रानी उसकी और वात्सल्यपूर्ण लोचन से देखती हुई बोली "हुजूर, मेरे बेटे का जीवन आपके हाथ में है । मेरे लाल की रक्षा कीजिएगा ।" मैं तन, मन, धन आपके चरणों पर अर्पण करती हूँ । स्वार्थ और दया के संयोग ने नईम को पूर्ण रीति से वशीभूत कर लिया ।

उन्हीं दिनों कैलाश नईम से मिलने आया । उसने यह सम्पूर्ण वृत्तांत कह सुनाया, नईम ने पूरे २० हजार की थैली ली थी । कैलाशने नईम को समझाया की यह सब गलत है । मत करो पर वह नही माना । और उल्टा कैलाश से उसे यह उम्मीद थी की वह भी उसी का साथ दे । लेकिन कैलाश का न्याय विचार नईम के हास्य और व्यंग्य से वेश न पा सका । कैलाश के सामने अब एक जटिल समस्या उपस्थित हुई । वह सत्य का साथ दे या मित्र का । लेकिन । कैलाश ने सत्य का साथ दिया । कोर्ट में न्यायाधीश के सामनेपेखी हुई

कैलाश को प्रश्न पूछते समय मानसिक कष्ट होता था । दोनो मित्र उदास थे । कैलाश अपनी तरफ से खुद केस लडता था । उसके सभी प्रश्नो का उत्तर नईम भ्कूढ बोलकर दे दिये । अदालत ने नईम को २० हजार रुपयों की डिग्री दे दी । कैलाश पर माने वज्रपात हो गया । मानहानि के २० हजार रुपये कहाँ से आते । किसी के आने की आहट मालुम हुई । गर्दन उठाकर देखा तो मिरजा नईम था । वही हँसमुख चेहरा वही मुस्कान । आते ही कैलाश के गले लिपटकर माफी माँगता है । उसे अपने किये पर पछतावा होता है । दोनों मित्र गले मिलते है । नईम २० रुपये की रसीद देता है और कहता है मैं रुपये पा गया । इस बेचारे का परदा ढका रहने दो ।

निहित शिक्षा :

कहा जाता है कि सच्चाई की हमेशा जीत होती है । ईमानदार मनुष्य भले ही थोडी देर के लिए कष्ट सहन करे पर आखीर में जीत सत्य व ईमानदार व्यक्ति की ही होती है । जिस प्रकार नईम केस तो जीत गया । पर सच्चा मित्र न रहा और जब उसे आत्मग्लानि हुई तो उसने माफी मागी ।

बूढी काकी

इस कहानी में प्रेमचन्द्र ने बुढापा बहुधा बचपन का पुनरागमन बताया है ।

बूढी काकी में जिहास्वाद के सिवा और कोई चेष्टा शेष न थी और न कष्टों की ओर आकर्षित करने को रोने के अतिरिक्त कोई दूसरा सहारा नहीं । समस्त इन्द्रियाँ, नेत्र, हाथ और पैर जवाब दे चुके थे । उनके पति देव को स्वर्ग सिधारे हो चुका था । बेटे तरुण चल बसे थे । अब एक भतीजे के सिवा ओर कोई न था । उसी भतीजे के नाम उसने अपनी सारी सम्पति लिख दी थी । यधपि उस सम्पति की वार्षिक आय डेढ सौ रूपये से कम न थी तथापि बूढी काकी को पेट भर भोजन भी कठिनाई से मिलता था । बुद्धिराम स्वभाव से सज्जन थे, तब तक ही जब तक कि उनके कोष पर कोई आँच न आये, रूपा स्वभाव से तीव्र थी । ईश्वर से डरती थी । बुद्धिराम को कभी कभी अपने अत्याचार पर खेद होता था । बुद्धिराम के दो पुत्र है । परिवार में यदि काकी से किसी को अनुराग था, तो वह बुद्धिराम की छोटी लडकी लाडली थी । रात का समय था बुद्धिराम के द्वार पर शहनाई बज रही थी आज बुद्धिराम के बडे लडके मुखराम का तिलक आया है । यह उसी का उत्सव है । स्त्रियाँ गा रही है और रुपा मेहमानों के लिए भोजन के प्रबन्ध में व्यस्त थी । कडाह चढ रहे थे । एक में पूडिमाँ कचोडियाँ निकल रही थी । दूसरे में अन्य पकवान बनते थे । एक बडे बरतन में मसालेदार तरकारी पक रही थी । बूढी काकी अपनी कोठरी में बैठी हुई थी । यह स्वाद मिश्रित सुगन्ध उन्हें बेचैन कर रही थी । बूढी काकी बडी कठिनाई से चोखट से उतरी और धीरे धीरे रेंगती हुई कडाह के पास आ बेठी । यहाँ आने पर उन्हें उतना ही धैर्य हुआ जितना भूखे कुत्ते को खानेवाले के सम्मुख बैठने से होता है । रुपा ने जब बूढी काकी को देखा तो वह भला बुरा कहते हुई बोली, “अभी महेमानो ने नहीं खाया, भगवान को भोग भी नही लगा तब तक धैर्य न हो सका । जल जाए ऐसी जीभ ।” बूढी काकी ने सिर न उठाया, न रोई न बोली । चुपचाप रेंगती हुई अपनी कोठरी में चली गयी । भोजन तैयार हो गया ।

आँगन में पतलें पड गयीं । मेहमान खाने लगे । मेहमानों कुछ हटकर से सेवकगण सभी उसी मंडली में भोजन करने बैठे थे । बूढी काकी मन ही मन अपने बुलावे की प्रतीक्षा करने लगी। परन्तु कोई बुलाने नही आ रहा था । उसने सोचा सभी खाकर जा चुके होगे और वह उकडूँ बैठकर सरकती हुई आँगन में आयी । प.बुद्धिराम काकी को देखते ही क्रोध में तिलमिला गया । बूढी काकी को दोनो हाथ पकडे और घसीटते हुए लाकर उन्हें अंधेरी कोठरी में धम से पटक दिया । मेहमान, घरवाले, धोबी, चमार भी भोजन कर चुके थे । पर बूढी काकी को किसी ने न पूछा । बुद्धिराम और रुपा दोंनो ही बूढी काकी को उनकी निल्ज्जिता के लिए दंड देने का निश्चय कर चुके थे । रात को ग्यारह बज गये थे । घर में सब सो रहे थे । लाडली की आँखो में नींद न आती थी । काकी को पूडियाँ खिलाने की खुशी उसे सोने नही देती थी । उसने अपने हिस्से की पूड़ियाँ गुडिया की पिटारी में काकी के लिए रखी थी । बूढी काकी को केवल इतना स्मरण था कि किसीने उन्हें पटका, वे मूर्छित हो गई । जब वे सचेत हुई तो किसी की जरा सी आहट न मिलती थी । सब लोग खा पीकर सो गए । वह सोचती थी कि रात कैसे कटेगी । पेट में अग्नि धधकती थी । काफी निराशमय संतोष के साथे लेट गयी । ग्लानि से गला भर भर आता था । परन्तु मेहमानों के भय से रोती न थी । सहसा उनके कानों में आवाज आयी । “काकी उठो मैं पूडियाँ लाई हूँ ।” लाड़ली ने पूडियाँ निकाल कर दी । लाडलीने काकी से पूछा काकी पेट भर गया । काकी की क्षुधा ओर इच्छा को उतोजित कर दिया था । नहीं बेटी जाकर अम्मा से और माँग लाओं । लाडली ने कहा अम्मा सोती है । जगाऊगी तो मारेंगी । काकीने लाडली से कहा । मेरा हाथ पकडकर वहां ले चलो जहाँ मेहमानो ने बैठकर भोजन किया है । उसने काकी को ले जाकर जूठे पतलो के पास बैठा दिया । दीन, क्षुधातुर, बुढिया पत्तलों से पूडियों के टुकडे चुन-चुनकर भक्षण करने लगी । काकी बुद्धिहीन होते हुए भी इतना जानती थी कि मैं वह काम कर रही हूँ जो मुझे कदापि न करना चाहिए । रुपा की आँख खुलीं । उसने यह सब दृश्य देखा उसका हृदय सन्न हो गया । एक ब्राह्मणी दूसरो की जूठी पतल टटोले, इससे अधिक शोकमय दृश्य असम्भव था । रुपा

ने पुरा थाल सजाकर काकी को उठाकर कहा काकी मुझे माफ कर दो । मुझ से आज बडी भूल हो गयी । काकी उस भोले भोले बच्चों की भाँति थी जो मिठाईया पाकर मार और तिरस्कार सब भूल जाती है । रुपा भगवन से बार बार प्रार्थना करती कि मेरे अपराध के लिए मुझे क्षमा कर दो ।

निहित शिक्षा :

इस कहानी से हमे यह शिक्षा मिलती है कि बचपन से लेकर जवानी तक जो माँ-बाप व बड़े बूढे हमे पाल पोसकर बडा करते है । जब बूढापे में उन्हें हमारी जरुरत होती है तो हमें उनका तिरस्कार नही करना चाहिए । जिस प्रकार बचपन में वह हमें खाना खिलाते है और प्यार देते हैं हमें भी बूढापे में उन्हें उसी प्रकार छोटे बच्चों कि तरह देखभाल करनी चाहिए । जिसकी वजह से हम इस दुनिया में है उनके साथ कभी अन्याय नहीं करना चाहिए। नहीं तो फिर रुपा की भाँति पछताना पडता है । और भगवान भी हमें कभी माफ नहीं करता हैं ।

ब्रह्मा का स्वांग

इस कहानी में स्त्री पुरुष की मानसिक स्थिति का वर्णन किया है ।

वृन्दा नाम की स्त्री जो एक ब्राह्मण की कन्या है । जिसकी व्यवस्था बडे बडे गहन धार्मिक विषयों पर सर्वमान्य समझी जाती है । वह कहती है मुझे याद नहीं, घर पर कभी बिना स्नान और देवोपासना किये पानी की एक बूंद भी मुँह में डाली हो । उसे एक बार कठिन ज्वर में स्नानादि के बिना दवा पीनी पडी थी । उसका उसे महीनों खेद रहा । किन्तु वह अपने आप को कहती है कि मैं मानो यहाँ आकर भ्रष्टलोक में पहुँच गयी हूँ । मेरे स्वामी बडे दयालु बडे चरित्रवान और बडे सुयोग्य पुरुष है । उनके सद्गुण देखकर मेरे पिताजी उन पर मुग्ध हो गये थे । लेकिन वे क्या जाने कि यहां लोग अघोर-पंथ के अनुयायी

है । संध्या और उपसना तो दूर रही, कोई नियमित रुप से स्नान भी नही करता । बैठक में नित्य मुसलमान क्रिस्तान सब आया-जाया करते है और उसके स्वामी उनके साथ दूध-चाय पी लेते है । चमार बेरोक टोक घर में चला आता है । यह भ्रष्टाचार मुझ से नहीं देखा जाता। वह कहती है कि मेरा चित्त घृणा से व्याप्त हो जाता है । वह अपने धर्म का कोई मूल्य नहीं ऐसा समझती है । वह अपने स्वामी को कोसती है । स्त्री जो अपने स्वामी को सब कुछ मानती है वह कहती है अब मुझे धैर्य नहीं । आज में इस अवस्था का अंत कर देना चाहती हूँ । मैं इस आसुरिक भ्रष्ट-जाल से निकल जाऊंगी । वह उसके पिता की शरण में जाने का निश्चय करती है । वह उसके पति के विचारों से धृणा करती थी । उसका पति वह बोला - स्वर्ग और नर्क की चिंता में वे रहते है जो अपाहिज हो । कर्तव्यहीन हो, निर्जीव हों। हमारा स्वर्ग और नर्क सब इसी पृथ्वी पर है । हम इस कर्मक्षेत्र में कुछ कर जाना चाहते हैं । फिर मैंने इस विवाद में उचित न समझा ऐसी नीति की शरण लेनी आवश्यक जान पडी, जिसमें विवाद का स्थान ही न हो । वृन्दा को धर्म पर बडी श्रद्धा है । मैंने उसे शास्त्र से उसे पराजित करने का निश्चय किया । बडे गंभीरभाव से बोला कि हम सब एक ही पिता की संतान होते हुए, एक दूसरे से धृणा करें, उंच-नीच की व्यवस्था में मग्न रहे । यह सारा जगत उसी परमपिता का विराट रूप है । प्रत्येक जीव में उसी परमात्मा की ज्योति आलोकित हो रही है। केवल इसी भौतिक परदे ने हमें एक दूसरे से पृथक् कर दिया है । यथार्थ में हम सब एक हैं । जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश अलग अलग घरों में जाकर भिन्न नहीं हो जाता, उसी प्रकार ईश्वर की महान आत्मा पृथक पृथक जीवों में प्रविष्ट होकर विभिन्न नही होती । मेरी इस ज्ञान वर्षा ने वृन्दा के शुद्ध हृदय को तृप्त कर दिया । वह तन्मय होकर मेरी बात सुनती रही। जब मैं चुप हुआ तो उसने मुझे भक्ति भाव से देखा और रोने लगी । वृन्दा कहने लगी, स्वामी के ज्ञानोपदेश ने मुझे सजग कर दिया । मैं अंधेरे कुएँ में पडी थी । इस उपदेशने मुझे उठाकर पर्वत के ज्योतिर्मय शिखर पर बैठा दिया । मैंने कितनी आत्माओं का निरादर किया? परमात्मा तुम मुझे क्षमा करो । धोबिन के सिर में बडा दर्द था । उसके सिर मैं घंटेभर तेल

मलती रही । मेरी नन्दने मेरे व्यवहार पर कुछ नाक-भीं चढायी, पर मैने लेशमात्र भी परवाह नही की । उसने सर्दी के मारे महरी को कांपते देखा । उसने अपनी ऊनी चादर लाकर उसे ओढा दी और हाथ पकडकर अंगीठी के पास बिठा लिया ।

कदाचित मध्य पथ पर रहना नारी प्रकृति ही में नहीं है । वह केवल सीमाओं पर ही रह सकती है । आज रसोई में सबके लिए नौकरों व घरवालों के लिए एक ही खाना बना । कल मेरे पति महाशय खुल पडे । इसीजिए मेरा चित्त खिन्न है । प्रभा संसार में इतना दिखावा, कल मेरी ननद की विदाई थी । कई महिलाओं को निमंत्रित किया । कई स्त्रियाँ भूमि पर बैठी थी । जहाँ इन महिलाओं की जूतियाँ और स्लीपर रखी हुई थी । वे बेचारी भी विदाई देखने आयी थी । मैंने उन्हे भी लाकर कालीन पर बैठा दिया । इन पर महिलाओं में मटकिया होने लगी । इस पर पति महाशय से किसीने यह समाचार कह दिया । वे बाहर से क्रोध में भरे हुए आये और कहने लगे । "तुम्हे ईश्वर ने इतनी भी बुद्धि नहीं दी कि किसके साथ बैठना चाहिए । भले घर की महिलाओं के साथ नीच स्त्रियों को बैठा दिया । मैंने सरल भाव से कहा, आत्मा तो सबकी एक ही है । आभूषणों से आत्मा तो ऊँची नहीं हो जाती । पतिदेवने खरी-खोटी सुनाई । उसी क्षण से पतिश्रद्धा और पतिभक्ति का भाव मेरे ह्दय से लुप्त हो गया । यह घर मुझे अब कारागार लगता है किन्तु में निराश नहीं हूँ । मुझे विश्वास है कि जल्दीया देर ब्रहाज्योति यहां अवश्य चमकेगी और वह इस अंधकार को नष्ट कर देगी।

निहित शिक्षा

इस कहानी के माध्यम से मुंशी प्रेमचन्द्र मनुष्य की वास्तविकता का वर्णन करते है और यह कहना चाहते है कि जिस ईश्वरने मनुष्य को बनाया है उनकी कथनी और करनी में अन्तर नहीं होना चाहिये । जिस प्रकार वृन्दा का पति कहता कुछ और है और करता कुछ और है । वह खानेपीने व मनोरंजन के लिए सभी जाति के लोगों के साथ रहता है । जब उसकी पत्नी उसे यह अपना धर्म नहीं है कहकर नफरत करती है तो वह शास्त्र का सहारा

लेकर उसे आत्मा का उपदेश देता है । और दीन दुखियों की मदद करती है तो उसे ऊँचनीच का भेद समझाता है, क्रोध करता है । तो उसका जिसे वह परमात्मा सम्मकती है उसका भ्रम टूट जाता है । और वह कहती है आज मुझे ज्ञान हो गया कि जो लोग एक साथ दो नाव पर बैठना जानते हैं वही जाति के हितैषी है ।

सुजान भगत

हिन्दी उपन्यास सम्राट प्रेमचंद ने यहाँ संकलित कहानी सुजान भगत के माध्यम से भारतीय किसान की मेहनत और परोपकार वृत्ति का परिचय कराया गया है । धन की वृद्धि के साथ साथे सुजान की परोपकारी वृति भी बढती जाती है । किन्तु परिवारजनों को यह नही सुहाता । और वह उससे अपने अधिकार चाहते है । सुजान भगत बर्दास्त नहीं कर पाता । इस कहानी में सीधे सादे किसान का वर्णन है, जो धन हाथ आते ही धर्म और कीर्ति की ओर झुकते है ।

सभ्य समाज की भाँति वे पहले अपने भोग–विलास की और नही दौड़ते । सुजान की खेती में कई साल से कंचन बरस रहा था । वह अगर ऊसर में भी दाना छींट आता तो कुछ न कुछ पैदा हो जाता था । बस, चित्त की वृति धर्म की और झुक पडी । साधु–सन्तों का आदर सत्कार होने लगा । द्वार पर धूनी जलने लगी । कानूनगो इलाके में आते तो सुजान महतो के चौपाल में ठहरते । हलके के हेड कांस्टेबल, थानेदार, शिक्षाविभाग के अफसर एक से एक उस चौपाल में पडा ही रहता । महतो मारे खुशी के फूले न समाते । कभी कभी भजन–भाव व सत्संग हो जाता । यह सब सुजान के दम का जुलूस था । घर में सेंरो दूध होता मगर सुजान के कण्ठ–तने एक बूँद जाने की कसम थी । कभी हाकिम लोग तो कभी महात्मा लोग चखते । किसान को दूध–घी से क्या मतलब उसे तो रोटी और साग चाहिए । सुजान सब के सामने सिर झुकाता रहता, कहीं लोग यह न कहने लगें कि धन पाकर इसे घमण्ड हो गया है ।

उसकी स्त्री बुलाकी और वह गया करने गये । यात्रा करके लौटे तो सुजान महंतो सुजान भगत हो गए । भगतों के आचार-विचार कुछ और ही होते हैं । स्नान भजन-भाव, पूजा-अर्चना, खान-पान आदि वह गौओं को दुहाते समय उसे बछडों का ध्यान बना रहता था । कहीं बछडा भूखा न रह जाए नहीं तो उसका रोयाँ दुखी होगा । उसके दोनों जवान बेटे बात-बात में उस पर फब्तियाँ कसते, यहाँ तक कि बुलाकी भी अब उसे कोरा भगत समझने लगी, चेतन-जगत में आकर सुजान भगत कोरे रह गए । सुजान के हाथों से धीरे धीरे अधिकार छीने जाने लगे । घर की कई महत्वपूर्ण बातो में भी भगत जी की सलाह न की जाती । भगत के पास कोई जाने ही न पाता । दोनों लडके या स्वयं बुलाकी दूर ही से मामला तय कर लिया करते । गाँव भर में सुजान का मान-सन्मान बढता था । अपने घर में घटता गया । अधिकार उसके हाथ में न था । वह अब घर का स्वामी नहीं, मन्दिर का देवता था । एक दिन बुलाकी ओखली में दाल फूट रही थी । एक भिखमंगा द्वार पर आकर चिल्लाने लगा । इतने में बडा लडका भोला आकर बोला, “अम्मा एक महात्मा द्वार पर खडे गला फाड़ रहे है कुछ देदो, नहीं तो उनका रोयाँ दु:खी हो जायगा । बुलाकीने उपेक्षा-भाव से कहा - भगत के पाँव में क्या मेंहदी लगी है । किस-किस का रोयाँ सुखी करुं ? दिन भर तो ताँता लगा रहता है ।” भिक्षुक को सुजान छोटी-सी छवड़ी को जौ से भरे हुए निकले सहसा भोलाने उनके हाथ से छबडी छीन ली और त्योरियां बदलकर बोला, “सेत का माल नहीं है, जो लुटाने चले हो । छाती फाड़-फाड़कर काम करते है, तब दाना घर में आता है । भीख, भीख की तरह दी जाती है । सुजान ने इसका कोई जवाब नही दिया, भिखारी से कहा - बाबा इस समय जाओ किसी का हाथ खाली नहीं है और पेड के नीचे बैठकर विचारों में मग्न हो गया । उसे यह अपमान लगा । उसने खाना भी नहीं खाया ।

उसको श्रद्धा की चाह नहीं सेवा की भूख नहीं । उसे अधिकार चाहिए । वह मन्दिर का पुजारी बनकर नहीं रह सकता । उसने अपने जवान बेटे को दिखा दिया कि वह अभी भी मेहनत कर सकता है । चैत का महीना था । खलिहानो में सतयुग का राज था । जगह-जगह अनाज के ढेर लगे हुए थे । यहीं समय है की जब कृषक को भी थोडी देर के लिए अपना जीवन सफल मालूम होता है । कितने ही भाट और भिक्षुक भगतजी को घेरे हुए थे । उसमें वह भिक्षुक भी था जो आज से आठ महीने पहले भगत के द्वार से निराश होकर लौटा था । भगतने भिक्षुक से कहा इसमें से जितना अनाज उठा कर ले जा सको, ले जाओ । भिक्षुक ने लुब्ध नेत्रों से ढेर को देखकर कहा – जितना अपने हाथ से उठाकर दोंगे उतना ही लूँगा । भगत ने उसे कहा तुमसे जितना उठ सके उठा लो । भगतने उसको गठरी बाँध कर दी और कहा ले जाओ । बाबा से गठरी उठाई नहीं जाती थी । भगत उसे घर तक छोडने जाता है । देखनेवाले भगत का यह पौरुष देखकर चकित रह गए । भोला सिर झुकाकर खडा था । उसे कुछ बोलने का हौंसला न हुआ । वृद्ध पिता ने उसे परास्त कर दिया था ।

निहित शिक्षा :

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है की किसी से उसका अधिकार नहीं छीनना चाहिए । जिस प्रकार कर्मठ सुजान के बेटोने उसका अधिकार लेना चाहा । भगतने अपने व्यवहार द्वारा कठोर परिश्रम को जीवन की सफलता का रहस्य बताया है । और वह वृद्ध होते हुए भी कठोर परिश्रम से अपने बेटो को परास्त कर देता है ।

मान सरोवर भाग-१ पूस की रात

हल्कू ने आकर स्त्री से कहा-सहना आया है लाओ, जो रुपये रखे है उसे दे दूँ किसी तरह गला तो छूटे ।

मुन्नी झाडू लगा रही थी । पीछे फिरकर बोली, तीन ही तो रुपये हैं, दे देंगे तो कम्बल कहाँ से आयेगा ? माध–घूस की रात हार में कैसे कटेगी । उससे कह दो, फसल पर दे देंगे । अभी नहीं ।

हल्कू एक क्षण अनिश्चित दशा में खडा रहा । पूस सिर पर आ गया, कम्बल के बिना हार में रात को वह किसी तरह नहीं जा सकता । मगर सहना मानेगा नहीं, धुडकियाँ जमावेगा, गालियाँ देगा । बला से जाडो में मरेंगे, बला तो सिर से टल जायेगी । यह सोचता हुआ वह अपना भारी भरकम डील लिए हुए जो उसके नाम को झूठ सिद्ध करता था, स्त्री के समीप आ गया और खुशामद करके बोला – ला दे दे, गला तो छुटे । कम्बल के लिए कोई दूसरा उपाय सोचूँगा । मनु उसके पास से दूर हट गयी और आँखे तरेरती हुई बोली कर चुके दूसरा उपाय । जरा सुनुं तो कौन सा उपाय करोंगे ? कोई खैरात दे देगा कम्बल ? मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोड देते ? मर–मर काम करो, उपज हो तो बाकी देदो, चलो छुट्टी हुई । बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जन्म हुआ है । पेट के लिए मजूरी करो । ऐसी खेती से बाज आये ।

मैं रुपये न दूँगी, न दूँगी । हल्कू उदास होकर बोला तो क्या गाली खाऊँ ? मुन्नी ने तडपकर कहा गाली क्यों देगा, क्या उसका राज है, उसने रुपये निकाले और लाकर हल्कू के हाथ पर रख दिये । फिर बोली – तुम छोड दो अबकी से खेती, मजूरी में सुख से एक रोटी तो खाने को मिलेगी । हल्कूने रुपये लिये और इस तरह बाहर चला मानो अपना हृदय निकालकर देने जा रहा हो । उसने मजूरी से एक एक पैसा काट काटकर तीन रुपये कम्बल के लिए जमा किये थे । एक एक पग के साथ उसका मस्तक अपनी दीनता के भार से दबा जा रहा था ।

पूरा की अंधेरी रात हल्कू खेत पर सोने जाता है । उसका संगी कुत्ता जबरा पेट में मुँह डाले सर्दी से कूँ कूँ कर रहा था । दोनों ठंड से ठिठुरते है । पत्तियों का ढेर लगाकर उस

में अलाव जलाते है । अलावा जल उठता है । उसे ऐसा लगता है उसने जैसे ठंड की असीम शक्ति पर विजय पाकर वह विजय गर्व को ह्दय में छिपा न सकता था ।

हल्कू अब सोने जाता है पर कुछ ही देर में खेत के किनारे अलाव के पास चादर ओढकर सो जाता है । जबरा जोर से मूकर खेत की और भागा । हल्कू को ऐसा मालूम हुआ कि जानवरों का एक झुंड खेत में आया हो । पर वह सोता रहता है । फिर एक बार आवाज करता है । उसने जोर से आवाज लगाीयी – लिहो–लिहो, लिहो । जबरा फिर भूँक उठा । जानवर खेत चर रहे थे । फसल तैयार है । कैसी अच्छी खेती थी पर यह दुष्ट जानवर उसका सर्वनाश किये डालते है । सवेंरे जब उसकी नींद खुली, तब चारों तरफ धूप फैल गयी थी । और मुन्नी कह रही थी, क्या आज सोते ही रहोंगे । तुम यहाँ आकर रम गए और उधर सारा खेत चौपट हो गया । दोनों खेत की दशा देख रहे थे । मुन्नी के मुख पर उदासी छायी थी, पर हल्कू प्रसन्न था । मुन्नीने चिंतित होकर कहा अब मजूरी करके मालगुजारी भरनी पडेगी । हल्कू ने प्रसन्न मुख से कहा रात को ठंड में यहाँ सोना तो न पडेगा ।

निहित शिक्षा :

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है गरीब इन्सान की मदद करनी चाहिए । उस समय कितनी गरीबी थी की हल्कू ढण्डियों में एक कबल नही खरीद सकता था । और उसे खेत पर ठंड में सोना पडता था । इस स्थिति का वर्णन उस कहानी में मिलता है । सबको अन्न देनेवाला किसान स्वयं कितना मजबूर है । सरकार को किसानों की दशा सुधारने का प्रयास करना चाहिये ।

नमक का दारोगा

मानसरोवर भाग ८ कहानी संग्रह में नमक का दारोगा प्रेमचंद कि प्रसिद्ध कहानी है । जब नमक का नया विभाग बना और ईश्वरप्रदत वस्तु के व्यवहार करने का नेषध हो गया तो

लोग चोरी छिपे इसका व्यापार करने लगे । अनेक प्रकार के छल प्रपंचो का सूत्रपात हुआ, कोई घूस से काम निकालता था, कोई चालाकी से । अधिकारियों के पै-बारह थे । पटवारीगिरी का सर्वसम्मानित पद छोड-छोडकर लोग इस विभाग की बरकंदाजी करते थे । इसके दरोगा पद के लिए तो वकीलों का भी जी ललचाता था ।

यह वह समय था जब अंगरेजी शिक्षा और ईसाई मत के लोग एक ही वस्तु समझते थे ।

उस समय मुंशी वंशीधर भी रोजगार की खोज में निकले । उनके पिता एक अनुभवी पुरुष थे । समझाने लगे, बेटा ! घर की दुर्दशा देख रहे हो, ऋण के कारण बोझ से दबे हुए है, लडकियाँ है वे घास फूस की तरह बढती चली जाती है । मैं कगारे पर का वृक्ष हो रहा हूँ न मालूम कब गिर पडूँ । अब तुम्ही घर के मालिक-मुख्तार हो । नौकरी में ओहदे की और ध्यान मत देना, यह तो पीर का मजार है । निगाह चढावे और चादर पर रखनी चाहिए । ऐसा काम ढूँढना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो । मासिक वेतन तो पूर्णमासी की चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते घटते लुप्त हो जाता है ।

ऊपरी आय बहता हुआ स्त्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है । वेतन मनुष्य देता है। इसी से उसमें वृद्धि नही होती । ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है । इसी से उसकी बरकते होती है । तुम स्वयं विद्धान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ । इस विषय में विवेक की बड़ी आवश्यकता होती है । गरजवाले आदमी के साथ कठोरता करने में लाभ ही लाभ है । लेकिन बेगरज को दाँव पर पाना जरा कठिन है । इस बातों को निगाह में बाँध लो यह मेरी जन्म भर की कमाई है ।

इस उपदेश के बाद पिजाती ने आर्शीवाद दिया । वंशीधर आज्ञाकारी पुत्र थे । ये बातें ध्यान से सुनीं और तब घर से चल खडे हुए । इस विस्तृत संसार में उनके लिए धैर्य अपना

मित्र, बुद्धि अपनी पथपदर्शक और आत्मा-वलम्बन ही अपना सहायक था । लेकिन अच्छे शकुन से चले थे, जाते ही जाते नमक विभाग के दारोगा पद पर प्रतिष्ठित हो गए । वेतन अच्छा और ऊपरी आय का तो ठिकाना ही न था । वृद्ध मुंशीजी को सुख-संवाद मिला तो फूले न समाए ।

जाड़े के दिन थे रात का समय नमक के सिपाही चौकीदार नशे में मस्त थे । नमक के दफ्तर से एक मिल पूर्व की और जमुना बहती थी, उस पर वावों का एक पुल बना हुआ था। दारोगाजी किवाड बंद किए मीठी नींद सो रहे थे । अचानक आँख खुली तो गाडियों की गडगडाहटता मल्लोहां का कोलाहल सुनाई दिया उठ बैठे । कुछ गोलमाल है ? जाकर देखा तो नमक की चोरी हो रही थी । नमक एक प्रतिष्ठित पंडित अलोपीदीन के वहाँ जा रहा था। वह इस इलाके के प्रतिष्ठित जमींदार थे । इधर छोटे से बडे कौन ऐसे थे जो उनके ऋणी न हों । मुंशीने पंडित अलोपीदीन को बुलावा भेजा । पंडितजी लक्ष्मीजी के भक्त थे । वह निश्चित थे । उन्होंने दारोगाजी को एक हजार से लेकर ५० हजार तक भेट चढानी चाही पर कोई फायदा नही हुआ ।

दारोगाजी एक ईमानदार व्यक्ति थे । धर्म ने धन को पैरों तले कुचल डाला । दुनिया सोती थी पर दुनिया की जीभ जागती थी । सवेरे तो बालक-वृद्ध सबके मुँह से यही बात सुनाई देती थी । जब दूसरे दिन पंडित अलोपीदीन अभियुक्त होकर कांस्टेबलों के साथ हथकडियाँ पहने ह्रदय में ग्लानि और क्षोभ भरे, लज्जा से गर्दन झुकाए अदालत की तरफ चले तो सारे शहर में हलचल मच गई । अदालत में पंडितजी केस जीत जाते है और अच्छाई व ईमानदारी की हार होती है । पर जब कुछ दिन बीत जाने के बाद जब वशीधर अपने घर जाते है तो घर पर भी सभी उनसे नाराज होते है । एक दिन पंडित अलोपीदीन शाम के समय मुंशी के घर आया और दारोगाजी से माफी मागता दंड और उसे अपने किये पर पछतावा होता है । वह कहता है आपको उदंड कठोर परंतु धर्मनिष्ठ दारोगा बनाए रखे

भगवान । और वह उसे अपनी सारी जायदाद का स्थायी मेनेजर नियुक्त करता है । वंशीधर की आँखे डबडबा आई । हृदय के संकुचित पात्र में इतना एहसाान न समा सका । एक बार फिर पंडितजी की और भक्ति और श्रद्धा की दृष्टि से देखा और कांपते हुए हाथ से मैनेजरी के कागज पर हस्ताक्षर कर दिए । अलोपीदीन ने प्रफुल्लित होकर उन्हें गले लगा लिया ।

निहित शिक्षा :

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें हमारे धर्म व ईमानदारी का रास्ता नही छोडना चाहिए । फिर चाहे सामनेवाला हमें कितना भी लालच दिखाए हमें हमारी ईमानदारी पर डटे रहना चाहिए । जिस प्रकार वशीधर डटे रहे । अंत में उन्हे उसका इनाम मिला । दूसरे शब्दों में अच्छे कार्य का अंत अच्छा व बुरे का बुरा होता हैं ।

४.२ उपसंहार :

इस अध्याय में संशोधनकर्ता ने प्रेमचन्द की कहानियों का अध्ययन कर उस में निहित सार्वभौमिक जीवन के सत्य को जानने का प्रयास किया है ।

प्रेमचंद की कहानियाँ जीवन की वास्तविकता का मनोहारी चित्रण करती हैं । गरीब किसान व मध्यमवर्गीय परिवार की दशा का चित्रण उन्होंने सरल व सुबोध भाषा में किया है। यथार्थ की कुरुपता का अंत उनके साहित्य में आदर्श के मेल से होता है । अत: उनकी कहानियाँ आदर्श व यथार्थ का अद्भूत सम्मिश्रण हैं ।

इस के बाद के अध्याय में शोधार्थी ने शोध के परिणाम का वर्णन किया हैं ।

पंचम अध्याय

संशोधन सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

पंचम अध्याय

संशोधन सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

५.१ प्रस्तावना

५.२ संशोधन सारांश

५.१.३ समस्या कथन

५.१.४ समस्या प्रकार

५.१.५ समस्या पद्धति

५.२ परिणाम

५.३ भविष्य के शोध के लिय सलाह

५.४ उपसंहार

पंचम अध्याय

संशोधन सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

५.१ प्रस्तावना :

प्रस्तुत अध्याय में शोधार्थी ने शोध के परिणामों का वर्णन किया हैं ।

५.१.२ संशोधन सारांश :

प्रस्तुत अध्याय में संशोधक द्धारा विश्लेषण के आधार पर अध्ययन के सारांश, निष्कर्ष, शैक्षणिक फलितार्थ एवं सुझाव प्रस्तुत हैं ।

५.१.३ समस्या कथन :

प्रेमचन्द की कहानियों में निहित शिक्षा ।

५.१.४ समस्या के प्रकार :

प्रस्तुत संशोधन दार्शनिक हैं । इसमें शोधार्थी ने प्रेमचन्द की कहानियों में निहित शिक्षा को जानने का प्रयास किया हैं ।

५.१.५ समस्या पद्धति :

इसमें शोधार्थी ने विषय वस्तु का विश्लेषण कर कहानियों में निहित शिक्षा को जानने का प्रयास किया हैं । अत: विषय वस्तु विश्लेषण पद्धति का प्रयोग हुआ हैं ।

५.२ परिणाम :

प्रेमचन्द की कहानियों का गहन अध्ययन व विश्लेषण करने पर निम्न परिणाम प्राप्त होते हैं । प्रेमचंद की कहानियाँ आदशोन्मुख यथार्थ का सजीव चित्रण करती हैं । तत्कालीन समाज की विसंगतियों का अंत आदर्श के साथ होता हैं ।

१. न्याय करने वाले व्यक्ति को मित्रता व शत्रुता के भाव से परे होकर न्याय करना चाहिए । प्रेमचंद की कहानियों में पंचो की महानता का पता चलता है । (पंच परमेश्वर)
२. बच्चे भी दूसरो की भावनाओं को समझकर उनके सहानुभूति रखते हैं । उनके मन में नि:स्वार्थ स्नेह होता है वे स्वार्थ से पर होते हैं । (ईदगाह) प्रेमचंद की कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है की अगर कोई अपने साथ कितना भी बुरा व्यवहार कर अपने को अपना कर्म नही छोडना चाहिए ।
३. भले ही भाई–भाई में कितना भी मनमुटाव हो, प्यार से आपस में बैठकर सुलझाना चाहिए ।
४. प्रेमचन्द की कहानी हमें यह शिक्षा प्रदान करती है कि विपरीत परिस्थितियों में हमें धैर्यपूर्वक विवेक से काम लेना चाहिए । (बडे घर की बेटी)
५. सच्चाई की हंमेशा जीत होती है । ईमानदार मनुष्य भले ही थोडे देर के लिए कष्ट सहन करे पर आखीर में जीत ईमानदार व्यक्ति की ही होती हैं । (डिग्री के रूपये)
६. प्रेमचन्द की कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि बचपन से लेकर जवानी तक माँ बाप व बडे बूढे हमें पाल पोसकर बडा करते हैं । जब बूढापे में उन्हें हमारी जरुरत होती है तो हमें उनका तिरस्कार नहीं करना चाहिए । (बूढी काकी)
७. कहानियों के माध्यम से मुंशी प्रेमचन्द मनुष्य की वास्तविकता का वर्णन करते हैं और वह कहना चाहते है कि ईश्वर ने मनुष्य को बनाया है उनकी कथनी और करनी में अन्तर नहीं होना चाहिये । (ब्रह्मा का स्वांग)

८. प्रेमचन्द की कहानियों से हमें यह शिक्षा मिलती है कि किसी से उसका अधिकार नहीं छीनना चाहिए । (सुजान भगत)

९. प्रेमचन्द की कहानियों से हमें यह शिक्षा मिलती है कि गरीब इन्सान की मदद करनी चाहिए । (पूस की रात)

१०. उनकी कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें हमारे धर्म व ईमानदारी का रास्ता नहीं छोडना चाहिए ।

भविष्य के शोध के लिए सलाह :

१. यशपाल कि कहानियों में निहित नारी चरित्र का अध्ययन ।

२. हरिवंशराय बच्चन के काव्य में सामाजिकता

३. डा. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित कृषक जीवन

४. राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में नारी चित्रण

५. डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर के सामाजिक उपन्यासों का गवेषणात्मक अनुशीलन

६. प्रसाद की मूल्यपरक चेतना का अनुशीलन काव्य के सन्दर्भ में ।

७. शरद जोशी कृत जादू की सरकार में व्यंग्य ।

८. डा. शंकरशेष के नाटकों में समसामयिकता ।

९. निर्मल वर्मा के उपन्यास साहित्य में चित्रित नारी ।

१०. श्री रामचरित मानस के मार्मिक कथा-प्रसंगो का मानव-मूल्यपरक अध्ययन ।

उपसंहार :

भारतीय साहित्य ऐसे महान कथाकारों और उन्यासकारों से भरा हुआ हैं । जिन्होंने जीवन के प्रत्येक रूप का विशद अध्ययन कर जीवन मूल्यों के विषय में सर्वभौमिक सत्य प्रतिपादित किये हैं । हिन्दी के अन्य कथाकारों के बीच प्रेमचन्द का आभा मण्डल अनुपम व प्रेरणादायी हैं ।

गरीब व मध्यमवर्गीय भारतीयों के जीवन की समस्याओं, तनाव, विसंगतियों तथा सरकारी अमले के भ्रष्टाचार का उन्होंने हृदयग्राही चित्रण किया है । जनसामान्य को समज में आनेवाली भाषा शैली, मुहावरेदार भाषा पाठकों के हृदय को अन्तरतम तक स्पर्श करती हैं ।

गाँधीवादी इस साहित्यकार ने यथार्थ के साथ साथ आदर्श को भी महत्व दिया । जिसके कारण उनकी रचनाओं में मूल्यों का समावेश है । जो जन–जन को प्रेरित करता है । छात्र और छात्राओं में मूल्यों का विकास करने के लिए प्रेमचन्द की कहानियाँ एक महत्वपूर्ण स्त्रोत हैं ।

संदर्भ सूची :

१. शर्मा रामविलास (१९९४), प्रेमचंद और उनका युग, नई दिल्ली, रामकमल प्रकाशन

२. नादरी, र्डा. हरदेव (१९८६), साहित्यकोश भाग-२, वाराणसी : ज्ञानमंडल लिमिटेड

३. मुंशी प्रेमचन्द, ३१ जुलाई २०१४, आज के दिन जन्म थे, पत्रिका समाचार समूह

४. बाहरी र्डा. हरदेव (१९८६), वाराणसी कोश भाग-२, ज्ञानमंडल लिमिटेड, पृ. ३५७

५. सिंह, डॉ. बच्चन (१९७२), प्रतिनिधि कहानियाँ, वाराणसी : अनुराग प्रकाशन, विशालाक्षी, चोक, पृ. १.

६. गोयनका डॉ. कमलकिशोर (संपादक), प्रेमचंद कहानी रचनावली साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, भूमिका

७. तिवारी डॉ. रामचंद्र (२००६)ख पृ. ४१८, हिंदी गद्‍य साहित्य, वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन

८. व्योम डॉ. जगदीश (२०११), प्रेमचंद मुंशी कैसे बने, सीटीजन पावर, मासिक हिन्दी समाचार पत्रिका, दिसम्बर

९. भंडारी मन्नू (२००८), रचना दृष्टि की प्रासंगिकता (एसएचटीएमहल), बीबीसी अभिगमन ।

१०. शर्मा, रामविलास (१९५३), भारत, प्रेमचंद और उनका युग, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

११. मदन, गोपाल (२००२), प्रेमचंद की आत्मकथा, नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन

१२. राय, अमृत (१९९०) कमल का सिपाही, नई दिल्ली, साहित्य अकादमी

१३. देवी शिवरानी (२००६), प्रेमचंद घर में, दिल्ली : आत्माराम एण्ड सन्स, आई.एस,बी,एँम ८१८८७४२०९०१

१४. वर्मा निर्मल, कमल किशोर गोयनका (२००४), प्रेमचंद रचना संचयन, साहित्य नई दिल्ली, आई,ऐस,बी,एँन ८१-७२०१-६६३-८१

१५. वाजपेयी, नंद दुलारे प्रेमचंद एक साहित्यिक विवेचन, आई.ऐस.बी.अेन ८१२ ६७०० ६८८१.